भारतीय वाङ्मय

वर्ष 1 | प्रवेशांक : जनवरी-फरवरी-मार्च 2000 | अंक 1

इक्कीसवीं शती का शब्द-संसार

पुस्तक प्रकाशन-व्यवसाय इक्कीसवीं शती की दहलीज पर दस्तक दे रहा है। सब कुछ बदल जाने की संभावना से प्रकाशक, विस्मय, चिन्ता और किंकर्तव्य की मन:स्थिति में परिवर्तन की गति को देख रहा है। आज देश और काल का व्यवधान समाप्त हो गया है। इलेक्ट्रानिक्स आविष्कारों ने मुद्रण, प्रूफ-संशोधन, प्रकाशन और वितरण की स्थितियों में चमत्कारिक परिवर्तन उपस्थित कर दिए हैं। कम्पोजिंग का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। अब तो सब कुछ कम्प्यूटराधीन होता जा रहा है। बड़ी से बड़ी पुस्तक का प्रकाशन अब वर्षों और महीनों में नहीं एक दो हफ्तों में संभव हो जायेगा। विज्ञापन तो और भी चमत्कारिक विधि से सम्पन्न होगा। इसमें उपग्रहों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सूचना-प्रधान सांस्कृतिक उन्मेष लेखन की गुणवत्ता को बहुत दूर तक प्रभावित करेगा। संवेदना और चिन्तन जब यांत्रिकता के दबाव में सूचना बन जायेंगे तो निश्चय ही पुस्तकों की गुणवत्ता प्रभावित होगी। अब शब्द-माध्यम का स्थान दृश्य-माध्यम लेते जा रहे हैं। इससे पढ़ने और लिखने की शक्ति का क्षय होगा। कल्पना-शक्ति छीजेगी। रचनात्मक प्रतिभा का ह्रास होगा। कल्पना-लोक, प्रत्यक्ष और इन्द्रियगोचर होकर अपनी रहस्यमयता खो देगा। स्वप्नदर्शी रचनाकार चिन्तित हैं कि कहीं ऐसा न हो कि शब्द-संसार पूरी तरह पंगु होकर अपना महत्त्व खो बैठे।

आज विचित्र मनोदशा है। आज भी विचारकों और रचनाकारों का एक बड़ा वर्ग इन परिवर्तनों से आक्रांत नहीं है। उनका कहना है कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। शब्द, आकाशधर्म होते हैं। आकाश वह तत्त्व है जिसमें क्षिति, जल, पावक, समीर सभी सूक्ष्म रूप में समाहित हैं। शब्दों के माध्यम से हम गति, स्थिति, नाद, चित्र, स्पर्श, गंध, आस्वाद आदि बिम्बों को मूर्त कर सकते हैं, करते हैं। नई तकनीक ने दूर-दर्शन और वी०सी०आर० को प्रतिस्पर्धा में उतारा है। इनमें श्रव्य और दृश्य-बिम्बों को ही मूर्त करने की क्षमता है। शब्द-संसार का स्थान ये नहीं ले सकते। पदार्थ से पद की व्याप्ति अधिक है। विज्ञान के नये चमत्कारों से जुड़कर रचनाकार अपने मानसिक क्षितिज का विस्तार करेगा और उसका कल्पनालोक विस्तृत होगा। यह अवश्य है कि प्रकाशन-व्यवसाय को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अपने को जोड़ना होगा। नये आविष्कारों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा। गति तेज करनी होगी। सतर्क रहना होगा। उपग्रहों के सहारे प्रकाशन-जगत् में होने वाली क्रान्ति पूरे पुस्तक-व्यवसाय को नई दिशा देगी। वे चाहेंगे तो एक साथ ही वे अपनी पुस्तकें कई बड़े नगरों में प्रकाशित कर सकेंगे। जिस प्रकार 'इन्सेट-बी' के माध्यम से 'मद्रास' में तैयार समाचार-पत्र दिल्ली में प्रकाशित होता है उसी प्रकार काशी में तैयार 'काशी की पांडित्य परम्परा' एक साथ काशी और चेन्नई दोनों जगहों से प्रकाशित हो सकेगी। हाँ, एक खतरा अवश्य है, और वह यह कि व्यावसायिक लेखन की प्रवृत्ति बढ़ेगी। बाजार विस्तृत होगा तो अर्थ-लाभ की पिपासा लेखकों को बाजारू लेखन के लिए प्रेरित करेगी। लेखन की गुणवत्ता प्रभावित होगी किन्तु इससे प्रकाशन-व्यवसाय की हानि नहीं होगी। आदर्शवादी प्रकाशकों का अहित अवश्य होगा और अहित होगा 'साहित्य' का। जो भी होगा, उससे अधिक निराश होने की आवश्यकता नहीं है। जब तक मनुष्य है, मनुष्यता है, मनुष्य में कल्पना-शक्ति है, तब तक साहित्य का आलोक धूमिल होने वाला नहीं। प्रकाशकों को अब अगली शती में विश्व रंगमंच पर अपनी नई भूमिका के लिए तैयार होना होगा। लेखक, इसके लिए अपने को तैयार कर रहे हैं। विश्वास है इक्कीसवीं शती का शब्द-संसार नई रोशनी लेकर आयेगा और पूरे क्षितिज को नये आलोक से भर देगा।

— डॉ० रामचन्द्र तिवारी

सहस्राब्दी का स्वागत

सहस्राब्दि के प्रथम दिवस पर त्रैमासिक 'भारतीय वाङ्मय' का प्रकाशन करते हुए हमें अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। काशी भारतीय संस्कृति का प्राचीनतम केन्द्र है। इसमें समस्त भारत समाविष्ट है। इस नगर में देश के विभिन्न प्रदेशों का प्रतिनिधित्व है। इसी प्रकार काशी के घाट देश के विभिन्न प्रदेशों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ के मुहल्लों तथा घाटों पर समस्त भारतीय भाषाएँ सुनने को मिल सकती हैं। यह विभिन्न भारतीय भाषाओं के विद्वानों की संगम स्थली भी है। 'भारतीय वाङ्मय' देश की समस्त भाषाओं, विशेषत: हिन्दी में अनुवादित प्रकाशित कृतियों की जानकारी देगा और उसकी चर्चा करेगा। इस प्रकार यह पत्रिका देश में बौद्धिक एकता स्थापित करने का प्रयास करेगी।

काशी विद्या का प्राचीन केन्द्र है। ब्रह्म ज्ञान उपासना की नगरी है पर, शब्द ब्रह्म को जनमानस तक पहुँचाने का श्रेय मुद्रण कला को है, जिसके माध्यम से अक्षर संयोजन और उसका मुद्रण कर विचारों को पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कहा जाता है कि गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग के जमाने में काशी के राजघाट स्थित किले में कहीं खुदाई हुई थी जिसमें प्रेस मिला था। इस प्रकार काशी में मुद्रण प्रकाशन की प्राचीन परम्परा जीवित है। इस पत्रिका के माध्यम से हम देश-विदेश में हिन्दी तथा भारतीय साहित्य के प्रकाशन और उनकी गतिविधियों को जनता तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

कबीर, तुलसी, रविदास और भारतेन्दु की नगरी काशी ने हिन्दी को बहुत कुछ दिया है और आज भी दे रहा है। यह नगर हिन्दी के क्षेत्र में दुनिया को दिशा प्रदान करने वाला रहा है। धर्म, साहित्य और संस्कृति के समन्वित रूप के साथ काशी ने लोकमंगल का संदेश दिया है। काशी से ही सबसे पहले केदार प्रभाकर और गोपाल चौबे के प्रेस से भारतीय साहित्य की लोकमंगलकारी रचना, 'रामचरितमानस' का 1752 ई० में प्रकाशन हुआ था। काशी में मुद्रण-प्रकाशन का इतिहास लगभग ढाई सौ वर्षों का है। ऐसे नगर से 'भारतीय वाङ्मय' का सहस्राब्दि के अवसर पर प्रकाशन ऐतिहासिक घटना है। हम इस पत्रिका के माध्यम से काशी की परम्परा को भी अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास करेंगे।

सहस्राब्दि का स्वागत हम नये संकल्प, नई विचारधारा और नई स्फूर्ति से कर पाठकों के समक्ष उपस्थित हो रहे हैं। सहस्राब्दि देश, देश की जनता विशेषकर शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, लेखकों और पाठकों के लिए मंगलमय हो।

राष्ट्रभाषा-राजभाषा

स्वतंत्रता पूर्व भारत एक राष्ट्र था, हिन्दी राष्ट्रभाषा थी, देश के विभिन्न भाषा-भाषी एक राष्ट्र के नागरिक थे। सत्ता प्राप्त होते ही, भारत एक से अनेक प्रदेशों में बँट गया, भाषावार प्रदेश के रूप में उनकी पहचान होने लगी। प्रदेश ने अपनी सत्ता, अपनी भाषा अपनी संस्कृति को राष्ट्र से अलग कर राज्य तक सीमित कर लिया। परिणाम यह हुआ कि कहने को हिन्दी राजभाषा कही गई, सभी प्रदेशों और उपक्रमों में राजभाषा विभाग स्थापित हो गये, करोड़ों, अरबों रुपये प्रतिवर्ष राजभाषा के नाम पर व्यय हो रहे हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि अंग्रेजी की प्रतिष्ठा बढ़ती जा रही है, पश्चिम बंगाल में प्रारम्भिक विद्यालयों में बंगला के प्रति राज्य-प्रयास हुआ किन्तु अंग्रेजी के समक्ष समर्पित होना पड़ा। यही स्थिति तमिलनाडु की है जहाँ अंग्रेजी के स्थान पर तमिल पढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है जिसका घोर विरोध हो रहा है।

यदि तुर्की की भाँति जिस दिन देश को आजादी मिली उसी दिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया गया होता तो उसी दिन हिन्दी राजभाषा बन गई होती और आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। उस समय देश में राष्ट्रीय भावना का ज्वार था। अंग्रेजी शासन के समय जनता शासक प्रशासक से दूर थी, आज वह दूर ही नहीं बल्कि शासन ने समाज में विष घोल दिया है। सारा देश अंग्रेजी के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास करने में लगा है। सारी शिक्षण संस्थाएँ अंग्रेजी शिक्षा की दुकान बन गईं। गरीब शिक्षा से दूर है, अंग्रेजी शिक्षा संस्थान की वेशभूषा आदि की भोंडी नकल कर एक नये प्रकार की हीनता से ग्रसित हो रहा है। समानता, समरसता दिवास्वप्न हो गई है। राजनीतिक सत्ता के लिए देश को विभिन्न धर्मों में ही नहीं जाति-जाति, सम्प्रदाय-सम्प्रदाय में, अगड़े-पिछड़े में विभक्त कर दिया गया। देश को भारतीय शिक्षा के माध्यम से उनको शिक्षित करने और उनके व्यक्तित्व के विकास का प्रयास नहीं किया गया। यह राजनीति देश को कहाँ ले जायेगी, यह देश के बुद्धिजीवियों के लिए ही नहीं सामान्य जनता के लिए भी विचारणीय है।

भाषायी साम्राज्यवाद और हिन्दी

भारत में 1991 की उदारीकरण की नीति के बाद से हिन्दी लगातार दोयम दर्जे की भाषा का रूप पकड़ती जा रही है। भारत में हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के होने के बाद भी अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के पीछे राजनीतिक संकल्प का अभाव है। वर्तमान भूमंडलीयकरण के युग में जिस तरह की एक स्वप्नीली दुनिया चमक-दमक में डूबी हुई बड़ी-बड़ी इमारतें जहाँ रुपयों का कारोबार करने वाले एक खास मानव समुदाय एक खास अन्दाज में बात करते हुए अंग्रेजी भाषा की दीवाल खड़ी करके अपने को अलग तरह का महसूस करते हैं। वर्तमान समय में अंग्रेजी और हिन्दी हमारे देश की स्वाभाविक भाषाएँ नहीं है बल्कि कुंठा से ग्रसित भाषाएँ हैं, अंग्रेजी के पास सुपीरियर कॉम्पलेक्स है तो हिन्दी के पास इन्फीरियर कॉम्प्लेक्स है। आप सुपीरियर को हीनता का एहसास तो नहीं करा सकते। लेकिन इन्फीरियर को हीनता के एहसास से उबार तो सकते हैं।

अंग्रेजी भारतीय समाज में कुलीनता का नहीं प्रभुता एवं विशिष्ट वर्ग की सदस्यता का प्रतीक बन गयी है। लेकिन अंग्रेजी बोलने से कोई अभिजात्य होता तो भारतीय भाषाओं में इतना महत्त्वपूर्ण साहित्य नहीं लिखा जाता जो अंग्रेजी में लिखे साहित्य से उच्च स्तर का है। भौतिकवादी संस्कृति के बढ़ते दबाव ने आम लोगों के दिमाग को खोखला बना दिया है।

यूरोपीय देशों का उपनिवेश जहाँ भी रहा है वहाँ पर संस्कृति एवं सभ्यता में गिरावट आयी है लेकिन अन्य देशों के राष्ट्रीय स्वाभिमान ने उस गिरावट से जमकर संघर्ष किया और अपनी मातृभाषा को उपलब्ध कर लिया।

वर्तमान समय में हिन्दी के साथ एक विडम्बनापूर्ण स्थिति यह है कि यह मुख्यत: शहरों की भाषा है जबकि हिन्दुस्तान के गाँवों एवं कस्बों की मुख्य भाषा मुख्यत: भोजपुरी, अवधी, मैथिली, ब्रज आदि होती है। इन्हीं के सहारे एक बहुत बड़ी आबादी अपना-अपना जीवन चलाती है। बोलियों से अलगाव के कारण आज हिन्दी भी कुलीनतावाद की शिकार हो रही है। हिन्दी को लेकर पूरे हिन्दुस्तान में शुरू से ही अन्तरविरोध रहा है। कभी बंगाल में हिन्दी को लेकर आन्दोलन हुआ तो कभी दक्षिण भारत में। वस्तुत: हिन्दी कोई भाषा नहीं है बल्कि एक जीवन पद्धति है जिसे हिन्दुस्तान की बहुतायत जनता जीती है, भले ही हिन्दी को लेकर गर्व का अनुभव न करती हो। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर प्रेमचन्द तक जितने लोगों ने हिन्दी को जिया है उन सारे लोगों में एक राष्ट्रीय चेतना तथा प्रबल राष्ट्रवाद हिलोरें मार रहा था।

हिन्दी के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह 'ट्रेड मार्क' भाषा का रूप अख्तियार नहीं कर पा रही है जैसाकि छद्म हिन्दीवादियों की शिकायत है। मेरी समझ में सवाल यह नहीं है कि हिन्दी व्यापारिक भाषा बन पायेगी या नहीं। मेरी समझ में सवाल यह है कि हिन्दी निश्चित रूप से व्यापार की भाषा नहीं होनी चाहिए। अगर कोई भाषा अपनी अस्मिता के साथ इसलिए खतरे में पड़ती है कि वह व्यापार की भाषा नहीं है तो यह उस भाषा का अपमान ही कहा जायेगा।

अत: भाषायी साम्राज्यवाद और व्यापारिक साम्राज्यवाद से लड़ने के लिए जरूरी है कि हम हिन्दी की मौलिकता को पहचानने के साथ-साथ अपनी मौलिकता को भी पहचानें तथा गर्व से कहें कि हम हिन्दी भाषी हैं। — **उपेन्द्र**

राजभाषा हिन्दी

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल॥

— **भारतेन्दु 'हरिश्चन्द्र'**

❑❑

''हिन्दी को देशभर में सरकारी काम-काज की भाषा स्वीकार करने का कारण केवल यह है कि सब प्रान्तीय भाषाओं की अपेक्षा इसे बोलने और समझने वालों की संख्या अधिक है। यह भाषा देश की ४२ प्रतिशत जनता की मातृभाषा है। इसके अलावा हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों की सीमा के बाहर रेलवे स्टेशनों पर बाजारों और तीर्थ स्थानों में, जहाँ विभिन्न अंचलों के अंग्रेजी न जानने वाले लोगों को आपस में बातचीत करनी होती है, हिन्दी को समझ जाते हैं।''

— **बी०जी० खेर**
अध्यक्ष, राजभाषा आयोग, 1956 ई०

❑❑

हिन्दी लोकभाषा है। हिन्दी का स्थान विश्व की प्रमुख भाषाओं की अग्रिम पंक्ति में है। हिन्दी को कभी राज्याश्रय नहीं मिला। वह तो सदैव अपने बल पर ही फली-फूली और फैली।

— **अटल बिहारी वाजपेयी**

❑❑

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में प्रान्तीय भाषाओं की हानि नहीं, वरन् लाभ है। हिन्दी के प्रति भारत के किसी कोने में वास्तविक घृणा नहीं है।

— **अनंत शयनम् आयंगर**

❑❑

सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का जीवित और समर्थ होना केवल हिन्दी के हित में नहीं है, बल्कि समस्त भारतीय भाषाओं के हित में है।

— **अमृतलाल नागर**

❑❑

हिन्दी विश्व की महान् तथा सशक्त भाषाओं में से एक है। हिन्दी ही देश में सम्पर्क भाषा का स्थान लेने योग्य है, जिसे अधिक लोग जानते हैं, बोलते हैं और समझते हैं, देश को एकता के सूत्र में आबद्ध करने की शक्ति केवल हिन्दी में है।

— **इन्दिरा गाँधी**

❑❑

हिन्दी-भाषा को विकसित करें। देश के विभिन्न भागों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। — **एन०टी० रामाराव**

❑❑

भारत की प्रचलित अनेक भाषाओं में जो सबसे जबरदस्त है, वह है— बहुव्यापिनी हिन्दी।

— **एनी बेसेंट**

संस्कृतवर्षम्

युगाब्द : ५१०१ (१९९९-२०००)

''.....विचारों का संप्रेषण जन भाषा में होना चाहिए। संस्कृत भाषा भी इसके साथ-साथ चलनी चाहिए क्योंकि संस्कृत के शब्दों की स्पष्ट ध्वनि, जाति को गौरव, बल तथा मजबूती प्रदान करती है। मेरा मानना है कि निम्न जातियों से संबंधित व्यक्तियों की स्थिति में सुधार लाने का एकमात्र सुरक्षात्मक उपाय यह है कि वह संस्कृत का अध्ययन करें.....।''

— स्वामी विवेकानंद

संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरंतन ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय और विद्वान नहीं बन सकता।

— महात्मा गाँधी

''यदि कोई मुझसे पूछे कि भारत के पास सबसे बड़ा ख़जाना और सर्वोत्तम धरोहर क्या है तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के कहूँगा कि संस्कृत भाषा और साहित्य तथा वह सब कुछ जो इसमें समाहित है। यह एक शानदार विरासत है और जब तक हमारे जीवन पर इसका प्रभाव कायम है तब तक भारत की यह श्रेष्ठता कायम रहेगी।''

— पण्डित जवाहरलाल नेहरू

संस्कृत को हाशिये की भाषा समझना भूल

सभी भारतीय भाषायें संस्कृतरूपी वटवृक्ष से उपजी हैं और संस्कृत भाषा को हाशिए की भाषा समझना भूल है। वह तो हमारी संस्कृति का मेरुदंड है।

संस्कृत मात्र धर्म और दर्शन की भाषा नहीं है। इसमें वैज्ञानिक साहित्य भी लिखा गया है। इसकी जानकारी हमारे आधुनिक विद्वानों को भी नहीं है क्योंकि इस साहित्य का अधिकांश भाग तो हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के रूप में सुरक्षित है।

जिस प्रकार की संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था इस समय देश में प्रचलित है, उससे संस्कृत के अनेक विद्वान भी उस साहित्य से अपरिचित हैं। यह आवश्यक है कि हम छात्रों के लिये संस्कृत में आयुर्विज्ञान, कृषि विज्ञान, वास्तुशास्त्र, गणित, रसायन शास्त्र, नगर नियोजन जैसे आधुनिक विषयों से सम्बन्धित मूल ग्रन्थों का सम्पादन और प्रकाशन करें। साथ ही विद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों को उनके बारे में जानकारी प्रदान की जाए।

— विद्यानिवास मिश्र

संस्कृत की याद तो आयी

बात 1948 की है। मियाँ नाजिमुद्दीन अहमद ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का सुझाव संविधान सभा में दिया था, तो उनका एक खास तर्क था। भारतीय भाषाओं की माँ में ही ऐसा दर्जा पाने की पात्रता है। पश्चिम बंगाल से निर्वाचित इस केन्द्रीय विधायक के जेहन में कदाचित एक अंदेशा था कि नव स्वतंत्र भारत का मजहब की भाँति भाषा के नाम पर फिर बँटवारा कहीं न हो जाए। भौगोलिक न सही, वैचारिक विभाजन तो होता रहा है। अभिव्यक्ति का माध्यम कम, भाषा आज सियासी लोई के लिए परथन बन गयी है। राजनेता की रोटी सिंकती है। अत: इसी सिलसिले में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री द्वारा इस सहस्राब्दि वर्ष को 'संस्कृत वर्ष' घोषित करना खुद में एक बड़ी पहल है। भगवद्गीता के कालखण्ड तक इस सारे भारतवर्ष को संस्कृत ने एक सूत्र में पिरोया था।

वैचारिक सृजनशीलता और अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में संस्कृत सदैव सम्पन्न रही, भले ही गत एक सहस्र वर्षों में वह बँधी रही, परिस्थितियों से विवश रही। ब्रिटिश न्यायविद् सर विलियम जोन्स (1746-1794) ने रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना करते समय कहा था, 'अपनी पुरातनता के साथ संस्कृत में ग्रीक भाषा से बेहतर सौष्ठव और लातिन भाषा से अधिक शब्द प्राचुर्य है।' अठ्ठासी वर्षीय जर्मन शोधकर्ता कुर्ट शिल्डमैन ने तीस वर्षों के अनुसंधान पर देखा कि लातिन अमरीकी राष्ट्र पेरू की गुफाओं का शिलालेख देवनागरी लिपि में है। एक बार पेरू की राजधानी लीमा में विश्व पत्रकार सम्मेलन में कुछ पेरू के प्रतिनिधियों ने भारत के बारे में बताया कि कई शब्द और वृन्दनृत्य पेरू में भारत से आये हैं। उन्हें लाने वाले यूरोपीय उपनिवेशवादी नहीं थे। संभवत: तमिलनाडु और कलिंग (उड़ीसा) के नाविक रहे होंगे। ये संस्कृतनिष्ठ शैली में थे। दक्षिण एशिया में तो प्रमाणित हो गया कि संस्कृत वहाँ की जनभाषा थी। इण्डोनेशिया के विजयी नेता का नाम मेघावती सुकर्णपुत्री है। थाईलैण्ड के राजा को 'राम' कहते हैं। मलेशिया में चीन से आये व्यापारियों का विरोध करने वाले राजधानी कुआलालम्पुर में उस संगठन के सदस्यों का नाम है, 'भूमिपुत्र जमात'।

फिर भारत में संस्कृत की ऐसी गत क्यों?

— के० विक्रम राव

संस्कृत साहित्य, व्याकरण तथा भाषा विषयक ग्रन्थ

रचनानुवाद कौमुदी	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	40.00
प्रौढ-रचनानुवाद कौमुदी	''	80.00
भाषा-विज्ञान तथा भाषाशास्त्र	''	200.00
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण)	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	200.00
संस्कृत-निबन्ध-शतकम्	''	70.00
अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	400.00
बालसिद्धान्त कौमुदी	*ज्योतिस्वरूप मिश्र*	50.00
अभिनव रस सिद्धान्त	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	40.00
वक्रोक्तिजीवितम्	''	40.00
अभिनव का रस-विवेचन	*नगीनदास पारेख तथा डॉ० प्रेमस्वरूप गुप्त*	100.00
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित)	*डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल*	50.00
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन	*डॉ० शालग्राम द्विवेदी*	100.00
उपरूपकों का उद्भव और विकास	*डॉ० इन्द्रा चक्रवाल*	100.00
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय	*डॉ० शिवशंकर गुप्त*	80.00
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	*डॉ० भोलाशंकर व्यास*	100.00
वेदचयनम्	*डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी*	50.00
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह	*डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र*	70.00
भुशुण्डि रामायण (तीन भाग)	*सं० डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*	475.00
मेघदूतम (कालिदास)	*डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी*	50.00
मुद्राराक्षसम्	*डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी*	100.00

संस्कृत साहित्य की कहानी

उर्मिला मोदी

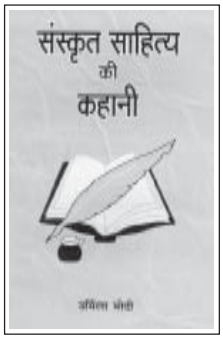

देववाणी संस्कृत अपने शब्द भण्डार, व्याकरण, भाषाशास्त्र तथा साहित्य सभी दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध भाषा है। संस्कृत-संस्कृति ने भारत की सभ्यता, संस्कृति, भाषा और साहित्य को अनेक रूपों में प्रभावित किया है। भारत की सभी भाषाएँ संस्कृत से जीवनी शक्ति ग्रहण करती रही हैं। यह हमारे ज्ञान और संस्कृति की धरोहर है, इससे हम रस ग्रहण करते हैं, यह हमें सभ्य, सुशील और समृद्ध बनाती है। संस्कृत भाषा तथा साहित्य कश्मीर से कन्याकुमारी, द्वारका से कामाख्या तक देश को एक सूत्र में बाँधती है।

जिन्होंने संस्कृत भाषा तथा साहित्य का विधिवत अध्ययन नहीं किया है उनके लिए संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि से परिचित होने की अपेक्षा है। संस्कृत साहित्य की कहानी इसी दृष्टि से प्रस्तुत की गयी है ताकि जनमानस को संस्कृत वाङ्मय की जानकारी हो सके और संस्कृत साहित्य के अध्ययन में उनकी रुचि जागृत हो।

संस्कृत वर्ष (1999-2000) के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक संस्कृत-संस्कृति प्रेमियों के लिए प्रेरक सिद्ध होगी, ऐसी आशा है। **पचास रुपये**

आदत में शामिल होना चाहिए पुस्तक पढ़ना

विद्वानों का मत है कि पुस्तकों पर खर्च किया गया धन कभी व्यर्थ नहीं जाता, पुस्तकें ज्ञान का भण्डार हैं। जहाँ तक पुस्तकों के पढ़े जाने का सवाल है तो इस विद्या में भारत लगातार पिछड़ता जा रहा है। एक समय था जब भारत में पुस्तकों की पूजा की जाती थी। सीमित पुस्तकें होने के बावजूद पढ़ने वालों की कमी नहीं थी। इस जमाने में लोग पुस्तकों को बड़ी-बड़ी मेज इत्यादि से बाँध कर रखते थे ताकि उन्हें कोई चुरा न सके। अब्राहम लिंकन ने किशोरावस्था के दिनों में उधार माँगी पुस्तक के खराब हो जाने पर पुस्तक के मालिक के खेत पर तीन दिन कार्य करके उसका मूल्य चुकाया था। यद्यपि उस वक्त साक्षरता न के बराबर थी परन्तु आम जन में पुस्तकों के प्रति आदर भाव दिखता था। अखिल भारतीय प्रकाशकों के एक सम्मेलन में पिछले दिनों केन्द्रीय गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की कि भारत में पुस्तकें उपयोगहीन, बेकार की वस्तु समझी जाने लगी हैं। अब अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के लिए भी लोगों के पास समय नहीं है। इससे प्रकाशक, लेखक एवं इस व्यवसाय से जुड़े तमाम लोगों की क्षति तो हो ही रही है साथ ही समाज भी बहुत कुछ खो रहा है। नयी पीढ़ी संस्कारहीन एवं भारतीय सभ्यता से दूर हटती जा रही है।

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में लोगों की विचारधारा में इतना बदलाव आ गया है कि किसी भी विषय का अध्ययन कर पाना तो दूर की बात है, वह वांछनीय सामान्य जानकारी से भी मुँह चुरा रहा है। आज किसी भी उच्चशिक्षित विद्यार्थी या शोध छात्र से पूछा जाए कि वह भारत के प्राचीनतम एवं सांस्कृतिक ग्रन्थ के बारे में कुछ जानता है, तो निश्चित ही उसका उत्तर नहीं में ही होता है। इस स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यों हो रहा है? इसका अर्थ यह तो नहीं है कि हजारों वर्ष पुराने गीता और कुरान, कबीर और रसखान का महाकाव्य, समाज का दर्पणरूपी साहित्य आज के बदलते सामाजिक परिवेश में महत्त्वहीन होकर रह गया है। आज के पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित भारतीय जीवन में उनका कोई मूल्यांकन नहीं रह गया है। पुस्तक मनुष्य के जीवन में पीढ़ी दर पीढ़ी उसके विकास, ज्ञान और मनोरंजन का प्रमुख एवं प्राचीनतम साधन रही है, तो फिर आज पाठक वर्ग ने पुस्तकों की महत्ता को क्यों झुठला दिया है? पुस्तकों के प्रति पाठकों की इस अरुचि का तात्पर्य यह तो नहीं है कि अब उसे ज्ञान अथवा मनोरंजन की आवश्यकता नहीं है? जहाँ तक मनोरंजन का सवाल है तो आज मनुष्य ने सस्ते एवं सुगम मनोरंजन के साधनों को अपना लिया है। रही बात ज्ञान की, तो इस सम्बन्ध में यह तो नहीं कहा जा सकता कि आज मनुष्य ज्ञान के मामले में इतना परिपक्व एवं ज्ञाता हो गया है कि अब उसे पुस्तकों की आवश्यकता ही नहीं है बल्कि सच तो यह है कि मनोरंजन की भाँति ही मनुष्य आज के बदलते सामाजिक परिवेश में ज्ञान अर्जित करने के कुछ नये एवं आधुनिक तरीकों को अपना कर पुस्तकों को पढ़ने से होने वाले समय एवं ऊर्जा की हानि से बचने के लिए कुछ नये साधनों की प्राप्ति करना चाहता है, ताकि उसके जीवन में आने वाली अन्य सुविधाओं हेतु यथासंभव समय बचा रहे।

हमारे विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तकों से इतर किताबें न पढ़ने में रुचि रखते हैं न उनके पास समय है। शिक्षकों को भी अन्य किताबों का या तो ज्ञान नहीं है या वे अपनी रुचि नहीं रखते सो वे छात्रों को प्रोत्साहित भी नहीं कर सकते, यह सच है। वैसे गुजरे हुए कल अर्थात् अतीत के साहित्य के प्रति पाठकों में उत्पन्न होने वाली नीरसतापूर्ण भावना के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो जाता है कि कुछ मुख्य कारक अवश्य हैं, जो इसके लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उत्तरदायी हैं। अब सीधे-सीधे टी०वी० अथवा सिनेमा पर भी दोषारोपण करना न्यायोचित न होगा, भले ही आज की नई पीढ़ी में सिनेमा अथवा मनोरंजन के अन्य साधनों के प्रति अगाध प्रेम ही क्यों न हो। वैसे जो व्यक्ति पुस्तकों के प्रति लगाव रखता है वह सिनेमा आदि की ओर आकर्षित होने पर पुस्तकों की महत्ता को भुला देगा यह जरूरी नहीं है और इसका अर्थ यह भी नहीं है कि पुस्तकों में मनोरंजन ही नहीं है। वैसे भी आज मनुष्य रोजी-रोटी एवं अन्य जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति में इतना उलझ गया है, उसे वक्त ही नहीं मिलता कि वह मनुष्य-जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं को समझ सके। अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जानने की पहल भी कर सके।

आज अमरीका जैसे धनी एवं साधन सम्पन्न देश में सर्वाधिक पुस्तकें छपती हैं, किन्तु पढ़ी रूस में अधिक जाती हैं। अमरीका में लोगों के पास इतना वक्त ही नहीं है कि वह छपने वाली सभी पुस्तकों को पढ़ सकें। यह अमरीका अथवा रूस की बात नहीं है। आज हम भारत की बात करें या अन्य किसी देश की, इस सम्बन्ध में प्रश्न यह नहीं है कि समस्त विश्व अथवा भारत में पुस्तकें छपती कितनी हैं? मुख्य प्रश्न तो यह है कि पुस्तकें छपने के बाद खरीदी कितनी जाती हैं और फिर उसके बाद पढ़ी कितनी जाती हैं। आज बाजार में बिकने वाली पुस्तकों की इतनी भीड़ है कि किसी भी सामान्य पाठक के लिए पुस्तकों के उस ढेर से बेहतर एवं गुणवान पुस्तकों का चयन कर पाना कठिन कार्य ही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में छोटे-बड़े लगभग 20 हजार प्रकाशक हैं। इनमें हजारों लेखक एवं प्रकाशक सरकारी भी हैं। यहाँ सवाल पुस्तकों के प्रकाशन एवं उनसे जुड़ने का नहीं है बल्कि पाठक द्वारा पढ़े जाने का है।

हमारी राष्ट्रभाषा में हिन्दी साहित्य की शायद ही कोई ऐसी पुस्तक होगी जिसकी एक लाख प्रति छपती हो। हिन्दुस्तान में हिन्दी की दुर्दशा भी इसके लिए एक हद तक उत्तरदायी है। पिछले कुछ समय में हमारे देश में अंग्रेजी भाषा की तरक्की हुई है जबकि मातृभाषा हिन्दी पतन की ओर जा रही है। वास्तव में अब समय आ गया है कि जब हिन्दी एवं हिन्दी साहित्य के सम्मान एवं वृहत प्रसार के लिए सरकार प्रभावशाली कदम उठाये, लेकिन यह भी हास्यास्पद है कि हमारे यहाँ के हिन्दी के तमाम विद्वान लंदन में तो हिन्दी सप्ताह मना रहे हैं पर यहाँ आते ही हिन्दी की दुर्दशा में शामिल हो जायेंगे।

—देशबन्धु वशिष्ठ

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अशोक वाजपेयी के अनुसार कबीर के 600 साल तथा पंत की जन्मशती के मौके पर भी विशेष आयोजन किये जायेंगे। राजभाषा हिन्दी की स्वर्ण जयन्ती के मौके पर सेवाग्राम में 'भारतीय भाषा समन्वय' कार्यक्रम होगा जिसमें सारी भारतीय भाषाओं और प्रदेशों की राजभाषाओं की स्थिति पर विचार होगा। पंत जन्मशती में पंत की आवाज में उनकी कविताओं का एक कैसेट भी जारी होगा और पंत द्वारा बनायी गयी फिल्म 'कल्पना' का भी प्रदर्शन होगा जिसमें प्रख्यात नर्तक उदयशंकर ने भाग लिया था। हिन्दी आलोचना में व्यावहारिक आलोचना का नितांत अभाव है। इसलिए 'पाठ' पर विशेष ध्यान दिया जायेगा और इसके लिए पाठ आधारित शिक्षकों के लिए तीन सप्ताह का प्रशिक्षण चलाया जाएगा।

विश्वविद्यालय विदेशों में हिन्दी के 150 केन्द्रों को यहाँ से समन्वित करेगा तथा पठन-पाठन के संबंध में उनकी जरूरतों को भी पूरा करेगा तथा देश के विश्वविद्यालयों को भी हिन्दी के पठन-पाठन के सम्बन्ध में समय-समय पर सुझाव आदि देगा। इस तरह हिन्दी भाषा एवं साहित्य का यह विश्व का सबसे बड़ा केन्द्र होगा।

प्रसिद्ध समीक्षक *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* द्वारा प्रस्तुत

रामकथा के अमर गायक तुलसीदास की कृतियों की विवेचना

कथा राम कै गूढ़

डॉ० रामचन्द्र तिवारी हिन्दी में 'अजातशत्रु' समीक्षक हैं। हिन्दी-आलोचना जगत् आज तीन खेमों में बँटा हुआ है—परम्परावादी और गैरपरम्परावादी। गैर परम्परावादियों में भी दो खेमे हैं—प्रगतिवादी और गैरप्रगतिवादी। परम्परावादी की पहचान उसकी 'रसवाद' या 'रससिद्धान्त' के प्रति आस्था है। कारण, उसके पीछे एक गहरा तत्त्वदर्शन है जिससे 'परम्परा' जुड़ी है। इस समय शेष दोनों खेमे 'रस' के प्राय: विपक्ष में हैं। मैं स्वयं परम्परावादी खेमे का हूँ और मानता हूँ कि काव्य भी एक प्रस्थान है जो ग्राहक को 'रस' तक पहुँचा कर उत्तम अर्थ में काव्य बनाता है। डॉ० नामवर सिंह प्रगतिवादी और डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी गैर प्रगतिवादी अ-पारम्परिक खेमे के आलोचक हैं और दोनों ने 'रस' के विपक्ष में बहुत कुछ कहा है। डॉ० तिवारी ने तीनों खेमों पर अपनी समीक्षाएँ, अंशत: या पूर्णत: लिखी हैं और सामान्यत: उनमें कहीं भी राग-द्वेष उभर कर नहीं आया है।

उनकी प्रस्तुत आलोच्य कृति 'कथा राम कै गूढ़' मध्यकाल के यशस्वी कवि गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कृतियों पर केन्द्रित है। अज्ञात तथा अल्पज्ञात की सूचनाएँ भी अधिक हैं। 'कथा राम कै गूढ़' शीर्षक से इस कृति में चार निबन्ध हैं। इन निबन्धों में संस्कृत तथा हिन्दी में निबद्ध सगुण तथा निर्गुण धारा की रचनाओं में रामकथा को कहीं प्रस्तुत और कहीं अप्रस्तुत बता कर विभिन्न मत दिए गये हैं। गूढ़ता का उद्घाटन करते हुए कहीं ज्ञानयोग की सात भूमियों को दृष्टिगत कर सातों काण्डों की संगति बिठाई गई है तो कहीं 'मानसरूपक' के विवेचन से अंतर्वर्ती विशेषताओं का अनावरण किया गया है। इस कृति के दो निबन्धों में **गाम्भीर्य** की अपेक्षा **व्यापकता** अधिक है। तीसरे निबन्ध में विभिन्न चरित्रों के लिए भी रामचरित किस तरह अनुद्धिबोध्य रहा है—इसका विशदीकरण है तो चौथे में इतिहास, पुराण, लोकगाथा तथा काव्य प्रबन्धों के तत्त्वों से संश्लिष्टता के कारण 'गूढ़ता' को स्पष्ट किया गया है। प्रस्तोता की चेतना में इस बात की व्यग्रता है कि कितनी कुछ जानकारियाँ समेट ली जायें।

बावजूद इसके रामकथा की गूढ़ता—सगुण या निर्गुण उभयविध धाराओं में अभी भी अविवेचित तथा असंस्पृष्ट रह गई है। राधास्वामी मत की एक पुस्तक है—'रामकथा का गूढ़ रहस्य'। इस पुस्तक में आधार बनाया गया है हाथरस वाले तुलसी के 'घटरामायण' को ही, पर व्याख्या अपनी दी है। भागलपुर में इन्हीं की शाखा के संत मँहींदास हैं।

उन्होंने भी अपने ढंग से बहुत सारी बातें कही हैं। साथ ही यह भी बताया है कि उपलब्ध 'घट रामायण' में प्रक्षेप पर्याप्त है। निर्गुण धारा में रामकथा को अप्रस्तुत बनाकर जो विभिन्न व्याख्याएँ रखी गई हैं उनमें अन्विति ढूँढ़ने से और गहराई आ सकती थी। प्राप्त तमाम अप्रस्तुतों में से कौन कहाँ तक संगत या असंगत है—परस्पर कितना विभेद या विरोध है और अंतत: लेखक का अपना मत किसके अनुकूल बनता है—इस दिशा में प्रस्थान से गाम्भीर्य लाया जा सकता है। वस्तुत: इसके लिए एक स्वतंत्र ग्रन्थ की जरूरत महसूस होती है। उक्त आधारों या सन्दर्भों में गूढ़ता का अनावरण तो हुआ है पर इसके अनावरण के और भी स्रोत हो सकते हैं। एक तो यही कि तुलसी के शब्दों में—

जिमि मुख मुकुर मुकुर निज पानी।
गहि न जाय अस अद्भुत बानी॥

भरत की बानी, जिसमें कथांश सम्मिलित है—वह बुद्धि की पकड़ में नहीं आ पाता। दो-चार उदाहरणों से इस दिशा में भी कुछ कहा जा सकता है। वैसे जो कुछ कहा गया है—साधार और सुस्पष्ट है।

उपस्थापक ने मध्यकालीन सांस्कृतिक संक्रान्ति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए जो निष्कर्ष निकाला है वह ठीक ही है। भारतीय सांस्कृतिक मानस अपनी प्रकृति के अनुसार बराबर 'विरोधों' में 'अविरोध' का मार्ग आविष्कृत करता रहा है पर समन्वय या अविरोध का यह प्रयास हिन्दू-मुस्लिम-समन्वय की दृष्टि से बहुत उत्साहवर्धक नहीं रहा। डॉ० तिवारी का यह कथन भी संगत है कि कबीर का धर्म उदार वैदिक धर्म नहीं, शुद्ध मानव धर्म है। पर कविराज गोपीनाथजी के अनुसार उनका 'सुरतशब्द योग'—वैदिक 'वाग्योग' का ही एक रूप है। यह भी सही है कि भारतीय काव्यशास्त्र में 'भाव' का द्विधा विभाजन किया गया है—स्थायी और संचारी। 'बीजभाव' का कथन वहाँ नहीं है। वस्तुत: 'प्रेम' और तदाधृत 'करुणा' लोकमंगल का बीजभाव है, अर्थात् इसका दायरा बहुत बड़ा है। 'भक्ति' के क्षेत्र में 'प्रेम' का ही प्रधान्य है जबकि लोकमंगल में 'करुणा' को प्रेम और क्रोध—दोनों की जरूरत है। जैसे प्रेम करुणा का आधार है वैसे ही क्रोध भी करुणा का सेवक है। आलम्बन-भेद करुणा और क्रोध में है, प्रेम और करुणा में नहीं। विरुद्धों का सामंजस्य क्रोध और करुणा में है। यहाँ का क्रोध भी लोकमांगलिक होने से सुन्दर है। काव्यशास्त्र में कभी श्रृंगार (प्रेम) को रसराज कहा गया और कभी 'एकोरस: करुण एव'। भोजराज ने स्पष्ट ही कहा—

श्रृंगार एव रसनाद्रसमाममाम:

वस्तुत: जो लोग संसार को 'सुख का सिन्धु' (शक्ति का विस्तार या प्रसार) मानते हैं—वे 'प्रेम' को ही मूल सत्ता मानते हैं—शेष भाव निमित्त भेद से उसके विपरिणाम हैं जो संसार को दु:खमय मानते हैं उनके लिए 'एको रस: करुण एव' है। शुक्लजी 'रस' की परिधि को लोकों तक बढ़ा ले गए हैं और वे 'प्रसाद' की तरह आनन्दवादी नहीं, 'विवेक' वादी हैं—अत: लोक-काव्य-साधारण रूप में दोनों की बीजभाव में कल्पना की है। इस तरह इस मान्यता पर और भी विचार किया जा सकता है। 'रामचरितमानस का अयोध्याकाण्ड' में लेखक ने कहा है—'तुलसी की दृष्टि में राम के चरणों में प्रीति से बड़ा कोई सांस्कृतिक मूल्य नहीं है'—सही है परन्तु तुलसी का 'प्रेम अमिय' भी 'सुरसाधुहित' में चरितार्थ है—प्रीति भी कैंकर्यपर्यवसायी होकर लोकमंगल ही बन जाती है, इसीलिए मंगलाचरण में सबसे ऊपर 'मंगलानाम् कर्त्तारौ' को रखा गया है। डॉ० तिवारी पता नहीं क्यों परेशान हैं, 'भक्तिसाधना' की तुलसी सम्मत 'सहजता' से। वस्तुत: 'सहजता' ही कठिन है, यह करने से नहीं, 'स्वभाव' से 'हो जाती है'। उन्होंने इसीलिए कहा है—

रघुपति भगति करत कठिनाई

जो काम (विरुद्ध जल प्रवाह में तैरना) हाथी के 'करने' से नहीं हो पाता, उसे शबरी अपने 'स्वभाव' से 'सहज' ही पा लेती है, कहा ही है—'जेहि पै बनि आई'। निश्चय ही कवितावली तुलसी की सुनियोजित रचना नहीं है। यह उनके द्वारा समय-समय पर रचे गए स्फुट छंदों का संग्रह है। अयोध्याकाण्ड (मानस) और 'कवितावली' पर लिखे गए ये लेख अध्ययन अध्यापन के क्षेत्र में पर्याप्त उपादेय हैं। जहाँ तक नारी के सम्बन्ध में तुलसी का पक्ष है—'मानस' का ऐसा कोई काण्ड नहीं है जहाँ सत्-असत् पात्रों द्वारा नारी निंदा न की

गई हो पर जब वे कहते हैं—''**नारि विस्नु माया प्रगट**'' तब नारी को माया से एक कर दोष माया के ही मत्थे मढ़ते हैं। यह माया अविद्या माया है, जब वह अविद्या माया से एकरूप है—तब तो निन्द्य है पर जब वह इस घेरे से बाहर है तब वह सर्वोत्तम भी है। भक्ति स्वयम् नारी तत्त्व (शक्ति) है। दोष कैकेयी का नहीं, माया का था। माया का ही परिणाम 'काम-वृत्ति' है जिसके कारण वह कामी पुरुषों के लिए कालरात्रि बन जाती है। मतलब नारी, नारी होने के कारण 'सहज अपावनि' नहीं है, कामवृत्ति रूप निमित्तवश उसका रूप निन्द्य है। यदि वह कठिन है तो माया के प्रभाववश है इसलिए दोषोद्घाटन से पूर्व हमें उसके मूल तक जाना पड़ेगा। अवशिष्ट निबन्धों में भी डॉ० तिवारी ने बहुत से अल्पज्ञात या अज्ञात तथ्यों की सूचना देकर विवेच्य की व्यापकता में भी वृद्धि की है।

इस प्रकार अपने विस्तृत आलोचन कर्म की शृंखला में प्रस्तुत कृति को भी डॉ० तिवारी ने 'कथा राम कै गूढ़' की महनीय कड़ी प्रस्तुत की है।

एक सौ पचीस रुपये —**डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी**

डॉ० रामचन्द्र तिवारी की प्रमुख कृतियाँ

हिन्दी का गद्य साहित्य	400.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	70.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश	50.00
कथा राम कै गूढ़	125.00
आधुनिक हिन्दी आलोचना : सन्दर्भ एवं दृष्टि	150.00
आलोचक का दायित्व	40.00
कबीर मीमांसा	90.00
हिन्दी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार	100.00
मध्ययुगीन काव्य साधना	250.00
निबन्ध निकष (संपादित)	40.00
रीति काव्यधारा (संपादित)	50.00
संक्षिप्त रामचन्द्रिका	20.00
श्रेष्ठ निबन्ध : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	40.00

आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष

●

रतन कुमार

भारतेन्दु-युग की कविता से आधुनिक-कविता का जन्म माना गया है। द्विवेदी-युग में वह शैशवावस्था पार करती है। छायावाद में युवा होकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी-कविता, साठोत्तरी-कविता एवं समकालीन कविता आदि चरणों से गुजरती आगे बढ़ती है। बीच-बीच में कुछ अन्य छोटे-छोटे प्रवाह रहस्यवाद, हालावाद, राष्ट्रीय-सांस्कृतिक-चेतना की धारा, प्रपद्यवाद आदि इनमें से निर्गत एवं समाहित होते रहे हैं। देश पर पाश्चात्य विचारों का गहरा प्रभाव आधुनिक-युग में रहा है। फ्रांस और रूस की क्रांति, अमेरिका, आयरलैंड आदि देशों की लोकतंत्रीय-चेतना, मार्क्सवाद, मनो-विश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, अतियथार्थवाद, प्रकृति-वाद आदि विचारों ने हमारे देश को प्रभावित किया। समय-समय पर हिन्दी कविता पर इनका प्रभाव पड़ा। भारतीय-चिंतन-प्रणाली भी विचार शून्य न थी। इसकी दार्शनिक चिंतन की परम्परा और समसामयिक सुधारवादी आन्दोलनों ने भी रचनाकारों को प्रभावित किया। उनके विचारों से कविता अछूती न रह सकी। आधुनिक-युग में भारतीय चिंतन पर भी गाँधी, लोहिया, अरविन्द की चेतना ने प्रभाव डाला है। एक आदर्श, नैतिकता, मानवता, समता, समानता, स्वतंत्रता का स्वर इस कारण कविता में गूँजने लगा। आजादी के बाद देश की राजनीति में मोड़ आया। कविता में वैचारिक धरातल पर कुछ वर्षों बाद एक अस्वस्थ विचारधारा उभरी, जो आगे चलकर आपात्काल के बाद सही दिशा में मुड़ गयी। आधुनिक-कविता के वैचारिक-पक्ष को स्पष्ट करने के लिए इन सबका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

डिमाई अठपेजी, पृ० 476, **चार सौ रुपये**

डा० भगीरथ मिश्र के प्रमुख साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ

काव्यशास्त्र	सजिल्द 150.00	अजिल्द 70.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद	सजिल्द 150.00	अजिल्द 70.00
नया काव्यशास्त्र		80.00
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद		50.00

संतो राह दुओ हम दीठा

कबीर : संत और विचारक

●

सं०-भगवानदेव पाण्डेय

संत कबीर निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक माने जाते हैं। निश्चित रूप से कबीर की वाणियों में आध्यात्मिक एकता और सांस्कृतिक एकता का पक्ष प्रबल है। संत कबीर, गुरुनानक और संत रैदास आचरण से, सिद्धान्त से बड़े ही उदार, विद्रोही और एकतावादी संत थे। इसीलिए तो संत कबीर ने मानवता विरोधी पाखण्डों का घोर विरोध किया है।

कबीर साहब का उद्देश्य था कि मानव-मानव एक है, मानव की संस्कृति एक है।

कबीर की सम्यक् विचारधारा पर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एक सौ पचास रुपये

हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई

●

डॉ० मदालसा व्यास

सामाजिक, ऐतिहासिक जड़ता के पत्थर पर प्रहार करने वाले परसाई के भीतर मानवीय करुणा की एक अजस्र धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही। अपनी पक्षधरता का प्रमाण वे जीवनपर्यंत अपनी लेखनी से देते रहे। कभी सच से आँख न छिपाई, झूठ का साथ नहीं दिया, निश्छल भाव से फरेब को बेनकाब किया तथा सच को सच की तरह पेश किया। उनकी बेबाक और बेलौस उक्तियों से भले ही कोई मर्माहत हुआ हो किन्तु उनका उद्देश्य किसी को पीड़ा पहुँचाना न था। वे जब मानवीय पीड़ा से बेधित होकर छटपटाते थे तो ही इस प्रकार के उद्गार फूटते थे। परसाई अपनी ईमानदार रचनाधर्मिता के मिसाल हैं। डॉ० व्यास ने परसाईजी की रचनाशीलता को गम्भीरता से चिन्तन-मनन करके इसमें शब्दबद्ध किया है। परसाई के अनेक छुए-अनछुए बिन्दु यहाँ आलोकित हुए हैं। हिन्दी-व्यंग्य विधा में तथा परसाई के रचना-संसार को जानने समझने में इसका सराहनीय योगदान होगा।

दो सौ रुपये

वाग्विभव

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

स्वनामधन्य श्री कल्याणमल लोढ़ा की प्रस्तुत कृति सच्चे अर्थों में 'वाग्विभव' है। वाणी का वैभव देखते ही बनता है। आलोच्य कृति में कुल आठ महाप्राण निबन्ध हैं। इन निबन्धों में उनकी आध्यात्मिक चेतना और शास्त्रीय बोध विस्मयावह स्तर तक पहुँच गया है। किसी भी निबन्ध को ले लें, लगता है कि किसी समृद्ध पुस्तकालय में शास्त्रवगाही और चिन्तक बैठ गया है और विवेच्य विषय से संबद्ध पुष्कल सामग्री संगृहीत कर ली है। संग्रह में जितनी व्यापकता पर चेतना केन्द्रित है—शायद अन्विति पर उतनी ही कम है।

कहीं-कहीं व्याख्या परम्परा से हटकर की गई है। ऋग्वेद में 'चत्वारि वाक परिमिता पदगनं....' इत्यादि श्लोक विद्यमान है। प्रो० लोढ़ा ने ठीक लिखा है कि इसकी व्याख्या यास्क ने यज्ञपरक और पतञ्जलि ने भाषापरक की है। भाषापरक व्याख्या करते हुए 'त्रिधा वद्धः वृषभो रोदतीति' से जिन तीन स्थानों पर बँधने की बात कही गई है, वे तीन हैं—उर, कंठ और शिर। परन्तु प्रो० लोढ़ा ने 'उर' को छोड़ दिया है और इसकी जगह 'हाथ' लिख दिया है। भाषा की उच्चारण प्रक्रिया में 'हाथ' कहाँ से आ जायगा?

वाग्विभवकार की दृष्टि यही है कि भारतीय संस्कृति के उन तत्त्वों का सम्यक् पर संक्षिप्त विवेचन किया जाय जो पुरातन काल से हमारी महनीयता के प्रमाण रहे हैं और जिन पर आज भी वैज्ञानिक नित नूतन दृष्टि से विचार कर रहे हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के बुनियादी घटकों—कर्म, पुनर्जन्म, मोक्ष, प्राण, भक्ति, श्रद्धा, काम तथा नीति का विवेचनार्थ चयन किया गया है। निश्चय ही वे बड़े ही महत्त्व के विषय हैं, इन पर सबकी गति सम्भव नहीं है। स्वयम् कहीं-कहीं लेखक भी व्यामुग्ध हो गया है। लेखक कहता है—''वासना त्रिविध है—भोग, जाति और आयु'' [पृ० 12] वासना के ये भेद नहीं हैं—ये तो 'प्रारब्ध' के सन्दर्भ की बातें हैं। प्रारब्धवश जन्म होता है और जन्म होता है, भोग के लिए और तदर्थ फल देने के लिए प्रारब्ध कर्म के भोग की अल्प अवधि आयु है।

लेखक की बहुश्रुतता में संदेह नहीं है। वह जहाँ-तहाँ पाश्चात्य विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से प्राप्त मान्यताओं को भी तुलना के लिए उपयोग करता है। ग्रंथ की प्रचुर और पुष्कल सामग्री को देखते हुए उसकी उपादेयता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता।

दो सौ रुपये **—डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी**

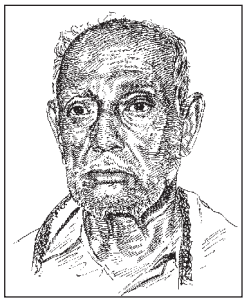

म०म०प० गोपीनाथ कविराज
की
अध्यात्मपरक कृतियाँ

मनीषी की लोकयात्रा	300.00
प्रस्तुति : डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह (महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)	
भारतीय संस्कृति और साधना	
भाग-1	200.00
भाग-2	120.00
तान्त्रिक साधना और सिद्धान्त	120.00
तान्त्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि	100.00
सनातन साधना की गुप्तधारा	100.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	80.00
ज्ञानगंज	(यंत्रस्थ)
दीक्षा	60.00
साधु दर्शन और सत्प्रसंग (भाग-1, 2)	80.00
साधु दर्शन और सत्प्रसंग (भाग-3)	50.00
श्री साधना	50.00
योग-तन्त्र-साधना	50.00
परातन्त्र साधना पथ	40.00
कविराज-प्रतिभा	64.00
स्वसंवेदन	50.00
काशी की सारस्वत साधना	35.00
भारतीय साधना की धारा	30.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान	20.00
श्रीकृष्ण प्रसंग	150.00
अखण्ड महायोग	50.00
विशुद्धानन्द प्रसंग तत्त्व-कथा	(यंत्रस्थ)

कविराजजी के गुरू तथा अन्य योगी-संत

योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	160.00
पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी	120.00
योगिराज तैलंग स्वामी	40.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी-221001

संत कबीर की 600वीं जयन्ती पर प्रकाशित

संत कबीर
और
भगताही पंथ
डॉ० शुकदेव सिंह
एक सौ तीस रुपये

★

संतो राह दुओ हम दीठा
संपादक
डॉ० भगवानदेव पाण्डेय
एक सौ पचास रुपये

★

अन्य ग्रन्थ
कबीर वाङ्मय
(पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित)
डॉ० जयदेव सिंह
तथा
डॉ० वासुदेव सिंह

खण्ड 1 :	**रमैनी**	**70.00**
खण्ड 2 :	**सबद**	**250.00**
खण्ड 3 :	**साखी**	**125.00**

★

कबीर काव्य कोश
डॉ० वासुदेव सिंह
एक सौ पचास रुपये

★

कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० शुकदेव सिंह
चालीस रुपये

इतिहासविद, मुद्राशास्त्री

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

की

प्रमुख कृतियाँ

भारत के पूर्व-कालिक सिक्के

इतिहास-निरूपण के निमित्त सिक्कों का सर्वाधिक महत्त्व है। इन सिक्कों पर अंकित आलेखों के माध्यम से अज्ञात तथ्य प्रकाश में आये और संदिग्ध समझे जाने वाले तथ्यों की पुष्टि भी हुई। इस प्रकार सिक्कों के माध्यम से प्राप्त जानकारी से इतिहास का प्रामाणिक स्वरूप प्रकाश में आया।

भारत में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के मुद्राशास्त्री (Numismatist) डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ने इस ग्रन्थ में पूर्वकालीन (आरम्भ से 12वीं शती ई०) सिक्कों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

सिक्कों के माध्यम से तत्कालीन इतिहास की जानकारी किस प्रकार होती है, इसका विस्तृत विवेचन पुस्तक में किया गया है। इतिहास तथा पूर्व-कालिक सिक्कों के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक में सिक्कों के अनेक चित्र सम्मिलित किये गए हैं।

एक सौ पचास रुपये

गुप्त साम्राज्य

गुप्त-साम्राज्य का काल भारतीय इतिहास का सर्वोत्तम काल (क्लासिकल एज) कहा जाता है। इस काल के इतिहास के सूत्र अपेक्षया कम और अनेक दिशाओं में बिखरे हुए हैं। उनको समेट कर विद्वान् लेखक ने गुप्त-साम्राज्य विषयक अधिक से अधिक सामग्री उपस्थित करने का प्रयास किया है।

यह ग्रन्थ सन्धान-सूत्र, वृत्तसन्धान, राजवृत्त और समाज-वृत्त चार खण्डों में विभक्त है। गुप्तकाल के समस्त अभिलेखों, सिक्कों, शिल्पों, साहित्यिक कृतियों आदि का विस्तृत अध्ययन करते हुए लेखक ने इस ग्रन्थ की रचना की है। विद्वानों ने इसे 'गुप्तकालीन इतिहास कोश' की संज्ञा दी है। गुप्त इतिहास के अध्येताओं तथा शोधकर्त्ताओं के लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। **तीन सौ पचास रुपये**

भारतीय वास्तुकला

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

- नागरिक और धार्मिक वास्तु का विवेचन।
- स्तूप, चैत्य-गृह और विहारों का परिचयात्मक इतिवृत्त।
- मन्दिरों के विकास और विस्तार का सांगोपांग वर्णन।
- मुस्लिम वास्तुकला की तात्विक व्याख्या, सिद्धान्त, सौन्दर्य प्रेषण और आलोचना।
- विद्वानों और विद्यार्थियों के लिए सहज भाषा में लिखी गयी भारतीय वास्तुकला सम्बन्धी पहली प्रामाणिक पुस्तक। **एक सौ पचास रुपये**

डॉ० गुप्त की अन्य कृतियाँ

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
[खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व) काल तक] 150.00

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : 319-543) 120.00

प्राचीन भारतीय मुद्राएँ 60.00

Other Books on History

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Verma* 300.00

Textiles in Ancient India *Dr. Kiran Singh* 200.00

British Kumaon *P. Whalley* *Intro. R.S. Tolia, I.A.S.* 250.00

Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00

Life in Ancient India *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100.00

The Imperial Guptas, Vol. I-II *Dr. P. L. Gupta* Each 150.00

The Administration of Avadh *T.P. Chand* 100.00

Growth of Political Awakening in U.P. (1858-1900) *Dr. Anand Shankar Singh* 250.00

Freedom Movement and Afterwards *Pt. Kamala Pati Tripathi* 200.00

दिल्ली सल्तनत (तराइन से पानीपत) *डॉ० गणेशप्रसाद बरनवाल* 80.00

बौद्ध तथा जैन धर्म *डॉ० महेन्द्र सिंह* 110.00

चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था *डॉ० रेणुका कुमारी* 60.00

बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ० शीला सिंह* 150.00

कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास *डॉ० महेशकुमार शरण* 175.00

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला *डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी व डॉ० कमल गिरि* 150.00

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास (1857-1947) *डॉ० सुशील माधव पाठक* 60.00

इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* 120.00

प्राचीन भारत

डॉ० राजबली पाण्डेय

प्राचीन भारत का इतिहास मानव इतिहास का एक बड़ा लम्बा अध्याय है। भारतीयों ने विस्तृत भूभाग पर सहस्राब्दियों तक जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रयोग और उससे अनुभव प्राप्त किया। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें उनकी देन न हो। अत: उनका इतिहास मनोरंजक और शिक्षा-प्रद है। गत दो शतियों में इस विषय पर विदेशी और देशी विद्वानों ने लेखनी उठायी है।

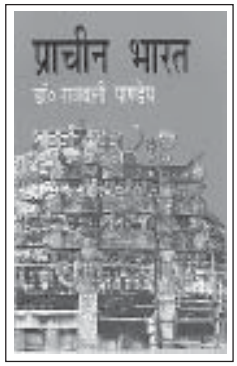

सबकी विशेषतायें हैं, परन्तु सबकी सीमायें और कुंठायें भी हैं। इससे भारत के प्राचीन इतिहास को समझने में अनेक समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। डॉ० पाण्डेय ने अपने तीस वर्ष के भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व तथा साहित्य के अध्ययन और मनन के आधार पर इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। इसमें प्राचीन भारत के सम्बन्ध में सुव्यवस्थित ज्ञान तो मिलेगा ही, साथ ही साथ अधकचरे अध्ययन से उत्पन्न बहुत-सी भ्रान्तियों का निराकरण भी होगा। भारतीय इतिहास की भौगोलिक परिस्थितियों से लेकर प्राचीन काल में उसके उदय, विकास, उत्थान तथा ह्रास का धारावाहिक वर्णन इसमें हुआ है। तथ्यों की प्रामाणिकता का निर्वाह करते हुए इसका प्रत्येक अध्याय उद्बोधक और व्यञ्जक है। इसमें ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तियों को ठीक संदर्भ में रखकर उनको चित्रित करने तथा समझाने का प्रयत्न किया गया है। प्राचीन भारत के इतिहास पर कतिपय पुस्तकों के रहते हुए भी यह एक अभिनव प्रयास और इतिहास-लेखन की दिशा में नया चरण है। इसमें राजनीतिक इतिहास के साथ जीवन के सांस्कृतिक पक्षों का समुचित विवेचन किया गया है। आधुनिक शोध और तकनीक के उपयोग के साथ इसमें भारतीय परम्पराओं और मान्यताओं का योग्य सम्मान भी हुआ। सभी दृष्टियों से यह ग्रन्थ भारतीय इतिहास को सुबोध और आकर्षक बनाता है।

तीन सौ रुपये

प्राचीन इतिहास

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *श्रीराम गोयल* 200.00

प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ *श्रीराम गोयल* 50.00

प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150.00

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण

इन्दिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित

डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी
डॉ० कमल गिरि
कला-इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

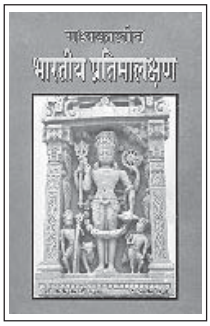

इस पुस्तक में सातवीं से तेरहवीं शती ई० के मध्य की देवमूर्तियों का ऐतिहासिक दृष्टि से लक्षणपरक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों और सोच की पृष्ठभूमि में हुआ है। मध्यकाल देवमूर्तियों के स्वरूप और उनके लक्षणों की विविधता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था। साथ ही तत्कालीन देवमूर्तियों में सामाजिक सामंजस्य और धार्मिक सौहार्द भी प्रतिध्वनित है जिसकी जानकारी वर्तमान विसंगतियों के सन्दर्भ में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

पुस्तक में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन प्रतिमालक्षण का संभवत: पहली बार एक साथ और विस्तारपूर्वक अध्ययन हुआ है जिनमें उनकी तुलनात्मक विशेषताओं को भी रेखांकित किया गया है। तालिकाओं एवं चित्रों के माध्यम से विषय को और भी स्पष्टता प्रदान की गयी है।

तीन सौ पच्चीस रुपये

प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा

डॉ० लल्लनजी गोपाल
भूतपूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
प्राचीन इतिहास, संस्कृति
एवं पुरातत्त्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत की राजनीति के स्वरूप के विषय में पाश्चात्य विद्वानों की भ्रामक धारणा रही है। वे भारत के प्राचीन साहित्य में से राजशास्त्र पर पृथक ग्रन्थ ढूँढ़ने लगे, जबकि स्थिति इससे सर्वथा भिन्न थी। नीति-शास्त्र अथवा राजशास्त्र (राजधर्म) उस सार्व-भौमिक और व्यापक धर्म का अंश था जो व्यक्ति, समाज और राज्य सभी के कार्य-कलापों का नियमन करता था। उनकी दृष्टि में राज्य और समाज दो भिन्न तत्त्व हैं।

भारतीय राजनीति का सही अध्ययन उसकी सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्थापनाओं की पूर्ण जानकारी के बिना सम्भव नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक में राजनीति के इसी स्वरूप को आधार बनाकर राजतन्त्र का विवेचन किया गया है।

डिमाई अठपेजी, पृ० 268, सजिल्द

एक सौ पचास रुपये

ग्रीक भारतीय अथवा यवन

डॉ० अवध किशोर नारायण

यह पुस्तक प्रोफेसर अवध किशोर नारायण की अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त पुस्तक 'दि इन्डो-ग्रीक्स' का हिन्दी अनुवाद है। इसमें उन ग्रीक लोगों का इतिहास है जो अफ़गानिस्तान में हखामनी सम्राटों द्वारा निर्वासित कर दिये गये थे और जिनके साथ बाद में अलेक्जांदर की सेना के साथ आये हुए ग्रीक-मैसिडोनियन उपनिवेशी भी शामिल हो गये थे। इन लोगों ने अलेक्जांदर के पूरबी उत्तराधिकारी सिल्युकसवंशियों के अधीनस्थ न रह कर बैक्ट्रिया में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया था और क्रमश: दक्षिण और दक्षिणपूर्व की ओर, आज के प्राय: सम्पूर्ण अफ़गानिस्तान एवं पाकिस्तान के भौगोलिक क्षेत्र पर अधिकार कर लिया, और गंगा-यमुना घाटी में भी घुसपैठ किया। इनके करीब चालीस शासकों ने लगभग दो सौ वर्ष तक अपना प्रभुत्व प्राचीन भारत के उन भौगोलिक हिस्सों पर, जो कि वर्तमान अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान में है, कायम रखा, पर ये वहाँ की मिट्टी में ही सन गये; भारतीय संस्कृति और प्राचीन पश्चिमी संस्कृति के बीच आदान-प्रदान में इनका महत्त्वपूर्ण योग रहा। इन्हें भारतीय साहित्य में यवन कहा गया, इनके राजा मिलिन्द बौद्ध हो गये, इनके एक राजपुरुष हिलियोदोरस भागवत् सम्प्रदाय के हुए। यदि एक राजा ने वासुदेव और संकर्षण के चित्र अपने सिक्कों पर दिया तो एक राजपुरुष ने बेसनगर में गरुड़स्तम्भ बैठाया। इनके सिक्कों की शुद्धता और कलात्मकता प्रसिद्ध है। प्राचीन संसार का सबसे बड़ा सोने का और सबसे बड़ा चाँदी का सिक्का इन लोगों ने चलाया। इनका इतिहास, जैसा कि इस ग्रन्थ के पाठक पायेंगे, सच पूछिये तो सिक्कों के साक्ष्य पर ही मुख्यत: आधृत है।

तीन सौ रुपये

कला

हंसकुमार तिवारी

'कला' सौन्दर्यशास्त्र एवं कलात्मक सौन्दर्य के अनुभूतिपरक परिपाक तक पहुँचने की प्रक्रिया के क्रमिक विकास का भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टि से मनोवैज्ञानिक एवं कलात्मक अध्ययन तथा विवेचन है। कला-विवेचन की दृष्टि से यह ग्रन्थ अपने-आप में परिपूर्ण तो है ही, पार्यन्तिक भी है।

एक सौ पचास रुपये

मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन

डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव
भूतपूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
इतिहास विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के आधार फ़ारसी भाषा में लिखे गये समकालीन ग्रन्थ हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में विदेशी विद्वानों ने कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थों के राजनैतिक अंशों के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किये। उद्धरणों के चयन के समय उस समय की इस्लामी मान्यताओं, लेखकों के पूर्वाग्रह, उद्देश्य, समकालीन परिस्थितियों पर ध्यान नहीं दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने सांस्कृतिक समन्वय, सामाजिक, आर्थिक तथा साधारण जनता के जीवन सम्बन्धी अंशों को भी छोड़ दिया। इन्हीं अनुवादों के आधार पर सौ वर्षों से अधिक तक मध्यकाल का इतिहास लिखा जाता रहा है। इससे मध्यकालीन भारतीय इतिहास युद्धों तथा धार्मिक संघर्ष मात्र का इतिहास रह गया, जिससे इतिहास विकृत हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ पूर्व मध्यकालीन फ़ारसी इतिहासकारों का मूल्यांकन है। इसमें उनके पूर्वाग्रह, समकालीन इस्लामी ऐतिहासिक परम्पराओं, लेखकों के पूर्वाग्रह, गुण-दोषों, विषयवस्तु, पुस्तक लिखने के उद्देश्य इत्यादि का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इससे मध्यकालीन भारतीय इतिहास को सही रूप में समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

अस्सी रुपये

प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला

डॉ० बृजभूषण श्रीवास्तव

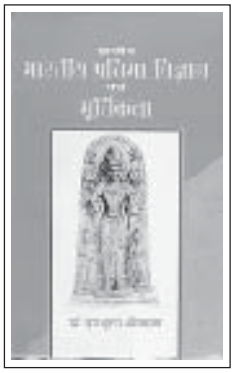

छात्रोपयोगी ग्रन्थ

छात्र संस्करण 120.00 **सजिल्द 200.00**

BENARES ILLUSTRATED
JAMES PRINSEP

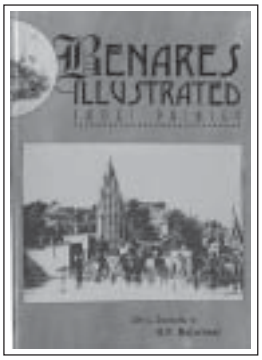

With an Introduction by
O.P. Kejariwal

A Reprint from the original Edition

Benares Illustrated published in 1830-31, consists of the drawing of most of the prominent *ghats* and other places of Benares together with their history and description. One wonders at the drawing skills of James : the minute detail, the three dimensional effect and the play of light and shade come out in all their vividity even after a hundred and fifty years.

The outstanding features of the new edition is the write-up on 'James Prinsep : His Life and Work' by Dr. O.P. Kejariwal. This is based almost entirely on material obtained from members of the Prinsep family and used for the first time by any scholar.

Rs. 800.00

B E N A R E S
The Sacred City
Sketches of Hindu Life & Religions

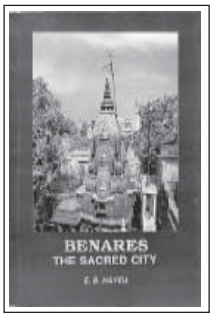

By
E.B. Havell
With many Illustrations

These sketches are an attempt to give an intelligible outline of Hindu ideas and religious practices, and especially as a presentation of the imaginative and artistic side of Indian religions, which can be observed at few places so well as in the sacred city and its neighbourhood—the birthplace of Buddhism and of one of the principal sects of Hinduism.

Rs. 150.00

काशी की पाण्डित्य परम्परा

●

पद्मभूषण आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय

यह ग्रन्थ गत साढ़े सात सौ वर्षों की काशी की पाण्डित्य परम्परा का परिचायक विवरण प्रस्तुत करता है। मध्य युग (1200 ई० – 1750 ई०) तथा अर्वाचीन युग (1750 ई० – 1950 ई०) में काशी में अध्ययन-अध्यापन करने वाले संस्कृत विद्वानों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुसन्धानमूलक परिचय तथा उनके ग्रन्थों का समालोचन पहली बार यहाँ दिया जा रहा है। इसमें शताधिक विशुद्ध पण्डितों का, विद्वान, संन्यासियों का तथा अंग्रेजीज्ञाता संस्कृतज्ञों का एकत्र समवेत विवरण तथा विमर्शण इत: पूर्व कहीं भी उपलब्ध नहीं है। इन पण्डितों के शास्त्रीय वैदुष्य तथा व्यावहारिक चमत्कार-विषयक दिव्य संस्मरण नितान्त रोचक एवं विशद रूपेण ज्ञानवर्द्धक हैं। व्याकरण, अलंकारशास्त्र, न्याय, वेद-वेदान्त, पुराण, आयुर्वेद एवं तन्त्र आदि नाना शास्त्रीय परम्पराओं को अग्रसर करने वाले, अलौकिक प्रतिभा तथा पाण्डित्य से विभूषित विद्वानों के वृत्त आधुनिक कहानियों से भी अधिक आकर्षक बन पड़े हैं। शैली विमर्शात्मक तथा भाषा रोचक है। काशी की पाण्डित्य-परम्परा के लगभग आठ सौ वर्षों का यह प्रामाणिक इतिहास संस्कृत प्रेमियों, जिज्ञासुओं तथा शोधकर्त्ताओं के लिए एक अमूल्य निधि सिद्ध होगा। इन विद्वानों के एवं सम्बद्ध संस्कृत संस्थाओं के चित्र इसके अन्यतम अनुपम आकर्षण हैं।

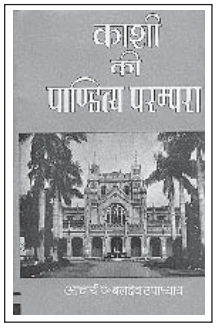

छः सौ रुपये

काशी का इतिहास

वैदिक काल से अर्वाचीन युग तक का राजनैतिक-सांस्कृतिक सर्वेक्षण

डॉ० मोतीचन्द्र

काशी पूर्व दिशा की शाश्वत नगरी है, न केवल भारत के लिए किन्तु पूर्वी एशिया के लिए भी।

— जवाहरलाल नेहरू

काशी उस सभ्यता की सदा से परिपोषक रही है, जिसे हम भारतीय सभ्यता कहते हैं, और जिसके बनाने में अनेक मत-मतान्तरों और विचारधाराओं का सहयोग रहा है। यही नहीं, धर्म, शिक्षा और व्यापार से वाराणसी का घना सम्बन्ध होने के कारण इस नगरी का इतिहास केवल राजनीतिक इतिहास न होकर एक ऐसी संस्कृति का इतिहास है, जिसमें भारतीयता का पूरा दर्शन होता है। लेखक ने इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी बिखरी हुई सामग्री को जोड़कर इस इतिहास का निखरा स्वरूप खड़ा किया है। नगर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए समाज की प्रक्रियाओं तथा धार्मिक अभिव्यक्तियों का भी पूर्णरूप से दर्शन कराया गया है। अपने विषय की यह एकमात्र कृति है।

दो सौ पचास रुपये

काशी के घाट
कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

●

डॉ० हरिशंकर

विश्व की प्राचीनतम नगरियों में अग्रणी काशी की धार्मिक-सांस्कृतिक एवं कलात्मक इतिहास की जीवन्त परम्परा में यहाँ के गंगातट पर स्थित घाटों का योगदान सर्वविदित है। अस्सी से आदिकेशव तक फैले 79 घाटों पर आज भी काशीवासियों की अखण्ड मौज-मस्ती भरी दिनचर्या और यहाँ की मूल धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा जीवन्त रूप में देखी जा सकती है। साथ ही इन घाटों पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन शैली और उनकी धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा का अक्षुण्ण प्रवाह भी समन्वय की धारा के रूप में प्रवाहित है। यहाँ के घाटों पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के शासकों एवं सम्पन्न लोगों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र की शैलीगत विशेषताओं में अनेकश: महलों, मठों, सामान्य भवनों तथा मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण कराया गया है जिनमें भारत की विविध कलात्मक शैलियाँ एक साथ देखी जा सकती हैं जो भारतीय संस्कृति की मूल चेतना विविधता में एकता की साक्षी हैं। वस्तुत: काशी के घाटों पर सम्पूर्ण भारतीय जीवन और परम्परा के प्रतीक रूप में किन्तु अपनी सम्पूर्णता के साथ अतीत और वर्तमान दोनों ही रूपों में जीवन्त रूप में देखी जा सकती है।

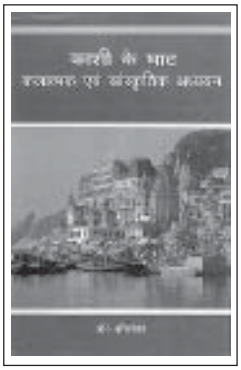

'काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन' शीर्षक प्रस्तुत पुस्तक में यहाँ के घाटों के ऐतिहासिक विकास के निरूपण के साथ ही घाटों के धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा और उनकी कलात्मक विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है। साथ ही घाटों के मंदिरों तथा मूर्तियों का विस्तृत शोधपरक अध्ययन अनेक चित्रों सहित पहली बार प्रस्तुत हुआ है।

तीन सौ रुपये

मैत्रेयी

●

प्रभुदयाल मिश्र

''.....इस कथानक की मैत्रेयी स्वयं से पूछ सकती है— उसे क्यों आवश्यक है आत्म साक्षात्कार के अनेक युगों के पश्चात् स्त्री-स्त्री और पुरुष की त्रिकोणीय परिधि में प्रस्तुत होना!.....उसे तो अब अपने आपको शास्त्रार्थ की विषयवस्तु के रूप में भी परोसना होगा! और इसमें यदि वह व्यंग्य, विनोद और उपहास का पात्र बनती है, तो क्या यह उसकी नियति है? आज जनक (महज एक पात्र!) की ज्ञान सभा में खुली हुई केश राशि, आवेगपूर्ण मुखमण्डल और गहन जीवनानुभव की बोझिल वाणी से शास्त्रार्थ को उद्यत मैत्रेयी पुनः एक चुनौती है, किसी याज्ञवल्क्य की नहीं, स्वयं और समाज की भी।''

परमात्मा का पता बतानेवाला उपन्यास

'मैत्रेयी' का कथानक ऋषि याज्ञवल्क्य और उनकी दोनों पत्नियों कात्यायनी और मैत्रेयी के बहुश्रुत जीवन प्रसंग पर केन्द्रित है, जिसमें प्रच्छन्न रूप से बहुपत्नी पृथा और स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के शाश्वत प्रश्न समाहित हुए हैं। वस्तुतः इन प्रश्नों में उलझना इस उपन्यास का उद्देश्य नहीं है।

लेखक की मूल उत्कंठा है 'परमात्मा के सही पते की खोज'। इस दृष्टि से लेखक की चेष्टा और सफलता साधारण नहीं है। उपन्यासकार ने बौद्धिक और आध्यात्मिक आनन्द को निचोड़कर जिस रसात्मक अनुभूति का अमृत मंथन किया है, वह उसके अनुष्ठान को सिद्धि ही प्रदान करता है। पुस्तक में याज्ञवल्क्य-शिष्य सामश्रवा के रूप में उपन्यासकार की सांयोगिक किन्तु अधिकारपूर्ण उपस्थिति तो स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो ही जाती है।

सम्पूर्ण उपन्यास को लेखक मधुकांड, कात्यायनी, याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, सामश्रवा, जनक, आरण्यक और मधुकांड-उत्तर जैसे उपशीर्षकों में विभाजित करता है। विदेहराज जनक की ज्ञानयज्ञ-सभा में याज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ प्रसंग इस उपन्यास का प्रस्थान बिन्दु है, जबकि वशिष्ठ-अरुन्धती, अत्रि-अनुसूया, केकेय कुमार अश्वपति, महर्षि उद्दालक, पिप्पलावाद, वैशम्पायन, अष्टावक्र, सत्यकाम, यम-नाचिकेता, शुकदेव-व्यास, महाराज जनश्रुति और ऋषि रैक्व, ययाति-देवयानी और शर्मिष्ठा आदि उपाख्यान प्रसंगों के स्मरण से लेखक ने कथा को विस्तार दिया है जो उपन्यास को पठनीय और रोचक बनाते हैं।

वर्णनात्मक शैली में लिखे गए इस उपन्यास की संवाद-संपदा तो उपनिषद से सहजरूप में प्राप्त हुई है, विषयवस्तु को बोझिलता से बचा ले जाने में लेखकीय कौशल ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। युगानुरूप परिवेश के संयोजन से इस कृति की विश्वसनीयता पुष्ट हुई है।

अपने सात्विक और निर्विकल्प भावों से प्रेरित लेखक लोकोत्तर आनन्द बाँटने में सफल है, क्योंकि आज जब विज्ञान एवं आधुनिकता के प्रेत से पीड़ित समाज सर्वव्यापी विषाद की विभ्रांतियों और कटुताओं से संत्रस्त तथा आगत के भय से भरा हुआ है, ऐसी स्थिति में 'मैत्रेयी' जैसे उपन्यास का प्रकाशन तपते रेगिस्तान में नखलिस्तान को उतार देने का काम है।

एक सौ बीस रुपये **नई दुनिया, भोपाल**

वाणी का क्षीर सागर

●

कुबेरनाथ राय

कुबेरनाथ राय के निबन्धों के वैशिष्ट्य का एक महत्त्वपूर्ण आधार उनकी अद्भुत रचना-भंगिमा तथा भाषा-शैली है। उनमें अध्ययन-प्रसूत विचार-गाम्भीर्य और सहज स्फूर्त भाव उद्वेग का अद्भुत सामंजस्य है। कहीं-कहीं तो दोनों का ऐसा संश्लेष है कि विचारों की गहनता रम्य हो गयी है और भावों की रम्यता गहन।

श्री राय की भाषा अत्यन्त समृद्ध है। संस्कृत की तत्सम शब्दावली, बोल-चाल की हिन्दी का शब्द-भण्डार, किरात-निषाद, यक्ष, गन्धर्व संस्कृतियों के साक्ष्य का निर्देशन करने वाले अनेक शब्द, अंग्रेजी भाषा के जाने कितने शब्द सबने मिलकर श्री राय की भाषा को समृद्ध कर दिया है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के बाद हिन्दी-निबन्ध साहित्य को महत्त्व और गरिमा प्रदान करने वाले रचनाकारों में श्री कुबेरनाथ राय अपने व्यापक अध्ययन, मिथकीय समीक्षा-सामर्थ्य, प्रकृति सम्बन्धी सोच, लोक-सम्पृक्ति, संस्कृति-निष्ठा एवं चिन्तन कवित्व-संश्लेषणजनित विशिष्ट रचना भंगिमा के कारण प्रथम में अधिष्ठित हैं।

वाणी का क्षीर सागर महासागर में समाहित हो गया। कुबेरनाथजी की यह अन्तिम कृति है।

एक सौ बीस रुपये

शिवानी का कथा साहित्य

चौदह फेरे (उपन्यास)	100.00
लाल हवेली (कहानी संग्रह)	60.00

अलीम मसरूर

बहुत देर कर दी (उपन्यास)	60.00
दिल का पौधा (कहानी संग्रह)	35.00

सागरी पताका

राधामोहन उपाध्याय

'सागरी पताका' एक ओर हिन्दू मिथकों के वास्तविक अर्थ को प्रकट कर रही है, तो दूसरी ओर भारत के गौरव अतीत को दिखा राष्ट्र-गौरव को बढ़ाती हुई राष्ट्रीयता की भावना को परिपुष्ट कर रही है। यह पुस्तक मुख्य रूप से भारत, अमेरिका व जर्मनी को प्राचीन बन्धुत्व के सूत्र में बाँध रही है। शस्त्र विजय की

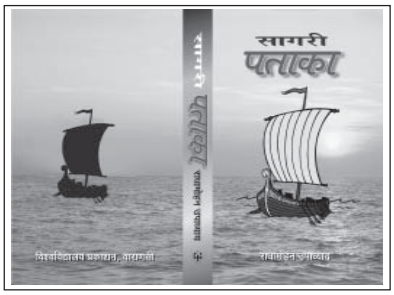

व्यर्थता को दिखाते हुए लेखक ने विश्व को प्रेम का सन्देश दिया है। अमेरिका और भारत की बीस हजार वर्ष पूर्व की गौरवमय समन्वित सभ्यता की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करते हुए, उन इतिहासकारों को पुनरीक्षण के लिए प्रेरित किया है, जो अमेरिकी सभ्यता को मात्र कुछ सौ वर्षों का मानते हैं।

दो सौ पचास रुपये

जगत तपोवन सो कियो

विवेकी राय

किसान चेतना के रचनाकार विवेकी राय के इन निबन्धों में गाँव की वह विरल गंध है जिसकी पहचान अब क्रमशः दुर्लभ होती जा रही है। अपने कथ्य को व्यंजित करने के लिए इन निबन्धों में पात्रों और स्थितियों को इस ढंग से प्रस्तुत किया गया है कि उनकी उपस्थिति मात्र से आधुनिक सभ्यता का सारा खोखलापन नग्न रूप में मूर्त हो उठता है। उनके पात्र शासन तंत्र और व्यवस्था के सारे दावों और घोषणाओं के सामने प्रश्न बनकर खड़े हो जाते हैं।

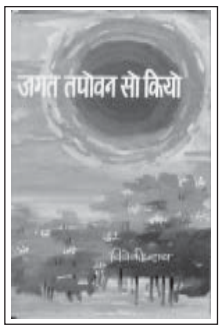

इन निबन्धों में विवेकी राय का सर्जनशील व्यक्तित्व ठीक उसी तरह अंकुरित, विकसित और पुष्ट हुआ है जिस तरह धरती के भीतर से बीजांकुर उभरता, बढ़ता और विकसित होता है। उनमें अपरिमेय जिजीविषा है। वे सच्चे अर्थों में धरती पुत्र हैं। यह कृति अपनी अकृत्रिम सौन्दर्य चेतना का परिचय प्रस्तुत करती है।

एक सौ रुपये

लोक साहित्य पर विशिष्ट ग्रन्थ

लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम

●

डॉ० शान्ति जैन

अछोर क्षितिज तक फैला अनन्त आकाश है— लोकगीतों का। अतल सागर जैसी गहराई है— लोकगीतों की। जंगल में उगे पेड़-पौधों की तरह अनादि है— इनका इतिहास। समग्र जन-जीवन के जीवन्त चित्र प्रस्तुत करते ये लोकगीत भारत की लोक संस्कृति के चित्रपट हैं।

लोकगीतों का संक्षिप्त परिचय, उसके प्रकार, विभिन्न प्रदेशों के संस्कार गीत, ऋतुओं के, व्रत-त्योहारों के, बालक-बालिकाओं के, नृत्य के, विभिन्न रसों के, धार्मिक भावना के तथा किसी भी समय गाये जाने वाले गीतों का अध्ययन ग्यारह अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

डिमाई अठपेजी, पृ० 736, पक्की जिल्द

सात सौ रुपये

कंथा-मणि

●

कुबेरनाथ राय

कंथामणि निबंधकार कुबेरनाथ राय का एकमात्र कविता संग्रह है। इसे अपने ढंग का आधुनिक हिन्दी में नया संग्रह कह सकते हैं। इसको किसी कोटि के भीतर बाँधा नहीं जा सकता। यह रचना विशेष रूप से कवि पाठकों को और चिन्तक पाठकों को सम्बोधित है। यह नदी का प्रवाह नहीं; गहरी नीली झील का संयत हिलोर है। समुद्र हो, नदी हो, साज और चाँदनी हो, कवि इन सब में एक तीव्र आध्यात्मिक आकांक्षा बढ़ते देखता है और उस आकांक्षा में अपना साधारणीकरण कर लेता है। जहाँ कवि संस्कृति के तार छेड़ता है, वहाँ वह पूरे सरगम के बीच संवाद स्थापित करता है। कवि के भीतर की तरलता कविता को सम्प्रेषणीय बनाये रखती है।

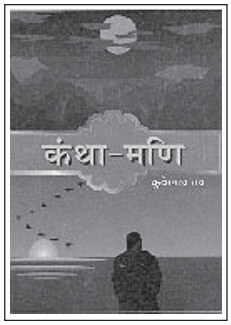

एक सौ रुपये

गीताञ्जलि

रवीन्द्र की गीताञ्जलि का अनुगायन

●

डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव 'शेखर'

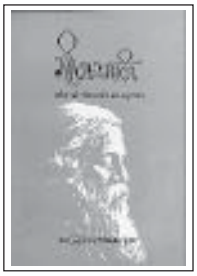

साठ रुपये

प्रमुख काव्य-संग्रह

जौहर	*श्यामनारायण पाण्डेय*	100.00
परशुराम (खण्ड काव्य)	*श्यामनारायण पाण्डेय*	60.00
वेलि क्रिसन रुकमणी री	*सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित*	80.00
मिरगावती (कुतुबन कृत)	*सं० डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	150.00
चांदायन (दाउद विरचित प्रथम हिन्दी सूफी प्रेम-काव्य)	*डॉ० माताप्रसाद*	100.00
कन्हावत (जायसी कृत)	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	80.00
महाराष्ट्र के प्रिय संत और उनकी हिन्दी वाणी	*डॉ० विनयमोहन शर्मा*	10.00
कसक	*चमनलाल प्रद्योत*	70.00
कालिदास : मेघदूत (काव्यानुवाद)	*डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा*	20.00
मोक्षदायिनी काशी में गंगा के तट पर	*केकी एन० दारूवाला*	40.00
माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः	*डॉ० शम्भूनाथ सिंह*	50.00
झूम उठे मनवाँ (भोजपुरी गीत)	*राहगीर*	50.00
सागर मन	*डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक*	30.00
संजीवनी (खण्ड-काव्य)	*श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'*	25.00
चीख	*अरुणकुमार केशरी*	40.00
आस्था के गीत अनास्था के बीच	*डॉ० भानुशंकर मेहता*	40.00
कल सुनना मुझे	*धूमिल*	25.00
तृष्या	*माधवीलता शुक्ल*	20.00
गूँजने दो उसे	*बच्चन सिंह*	40.00
द्वन्द्व	*अरुणकुमार केशरी*	60.00
भक्तभावन (ग्वाल कवि)	*डॉ० प्रेमलता बाफना*	80.00
नेमिकुंजरकृत गजसिंह कुमार प्रबन्ध	*डॉ० मदनगोपाल गुप्त*	10.00

असीम कुछ भी नहीं

सदानन्द शाही

'असीम कुछ भी नहीं' सदानन्द शाही का पहला काव्य-संकलन है। अपने नाम के अनुरूप इस संग्रह की कविताएँ विराट या भव्य के विरुद्ध साधारण का पक्ष लेने वाली कविताएँ और एक खास अर्थ में भव्य या 'असीम' के बिम्ब को तोड़ने वाली कविताएँ भी हैं। अभिधा के सहज ठाट में लिखी हुई ये कविताएँ मानो चुपचाप यह साबित करने का प्रयास करती हैं कि वर्तमान जीवन के गद्य को व्यक्त करने की सबसे अधिक क्षमता अभिधा में ही है। इस अभिधावृत्ति को धार देने के लिए इस युवा कवि ने अक्सर व्यंग्य या विडम्बना का सहारा लिया है। इस प्रकार इस पद्धति के द्वारा एक अलग ढंग का शिल्प विकसित करने का प्रयास किया गया है। एक अच्छी बात यह है कि ये कविताएँ कोई दावा नहीं करतीं और जो जैसा है, उसको उसी तरह बिना किसी रचाव या साज-सज्जा के, पाठक के सामने रख देने में ही अपनी कलात्मक पूर्णता पाना चाहती हैं, कविता के उत्स तक इस तरह पहुँचना आसान नहीं होता और इस संग्रह के कवि को अपने अनुभव पर जो भरोसा है, वह इस बात का प्रमाण है कि उसने पूरे दायित्व के साथ सोच-समझ कर इस रास्ते को चुना है। एक नये कवि में इस प्रकार साहस अच्छा लगता है और एक हद तक पाठक को, उसके भावी प्रयासों के प्रति आश्वस्त भी करता है।

इस संग्रह में एक कविता है 'दिल्ली में तुम्हें खोजते हुए', जो प्रकारान्तर से, एक युवा कवि की उस सृजनात्मक बेचैनी को व्यक्त करती है, जो सत्य की तलाश के इस चक्करदार रास्ते पर उसकी आत्मा की सबसे बड़ी पूँजी है—

''मेरे पास न तुम्हारा नाम है, न पता
और न ही कोई फ़ोन नम्बर है
मेरे पास सिर्फ तुमसे मिलने की ललक है
जिस पर सवार मैं रिंगरोड पर घूम रहा हूँ
कि इस गोल चक्करदार दुनिया में
मिल ही जाओगे
किसी न किसी स्टाप पर
अपने आप!''

केदारनाथ सिंह

'असीम कुछ भी नहीं' की कविताओं से गुजरते हुए हम कविता की दोहरी भूमिका को अनुभव करते हैं। एक तरफ यह एक मूल्यवान सकारात्मक दुनिया की काव्य सृष्टि है तो दूसरी ओर एक प्रतिरोधी नकार जो उस व्यवस्था के प्रति है जो कवि के लिए सहजता और सामान्यता की दुनिया पर ग्रहण डालना चाहती है।

सौ रुपये **जनमोर्चा**

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

योग साधना (80 चित्रों सहित)
दुर्गाशंकर अवस्थी 120.00
योग के विविध आयाम
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 40.00
दीर्घायु के रहस्य *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 50.00
मधुमेह और आहार
सं० डॉ० भानुशंकर मेहता 100.00
माँ और शिशु *डॉ० भानुशंकर मेहता* 15.00
स्वास्थ्य का क ख ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 10.00
आबादी की बाढ़ *डॉ० भानुशंकर मेहता* 8.00
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए
डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय 50.00

मनीषी, संत, महात्मा

Acharya Sri Sankara's Advent (Investigation and Decision)
V. Raj Gopal Sharma 30.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 12.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा
डॉ० गिरिराज शाह 100.00
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत के महान योगी (भाग 1 से 10)
विश्वनाथ मुखर्जी 400.00
भारत की महान साधिकाएँ ,, 40.00
रावण की सत्यकथा *नगीना सिंह* 60.00

अध्यात्म, गीता

गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
जपसूत्रम (द्वितीय खण्ड)
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती 150.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
वेद व विज्ञान
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती 180.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन (अद्भुत लीला प्रसंग)
शारदाप्रसाद सिंह 40.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता)
हरीन्द्र दवे 80.00
कृष्ण का जीवन संगीत (गीता)
डॉ० गुणवंत शाह 300.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी (गीता)
(अनु०) ना०वि० सप्रे 250.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में)
श्री श्यामाचरण लाहिड़ी 325.00
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद
अशोककुमार चट्टोपाध्याय 100.00

भ्रमर-गीत

●

प्रवचन

अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराज

संकलन

श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला

कृष्ण-दर्शन के लिए गोपाङ्गना-जनों की अत्यन्त तीव्र लालसा को देखकर उद्धव ने उनको अपने स्वामी श्रीकृष्ण का संदेश सुनाया।

श्रीमद्भागवत के अनुसार गोपाङ्गनाओं ने ज्ञान का निरादर नहीं किया अपितु उनको उद्धव के उपदेशों से आश्वासन ही मिला। वस्तु-दृष्ट्या विवेचन करने पर यह प्रत्यक्ष हो उठता है कि ज्ञान का उद्देश्य भगवान् के सच्चिदानन्दघन सगुण स्वरूप का खण्डन करना नहीं है अपितु देह-भिन्न अप्रत्यक्ष परमात्मा प्रभु का साक्षात्कार कराना है। ज्ञानी को भी देह-धर्म की अनुभूति होती ही है तथापि उसका तज्जन्य चाञ्चल्य शेष हो जाता है। देहातिरिक्त अजर-अमर अनन्त, अखण्ड, स्वप्रकाश आत्मा का बोध करा देना ही ज्ञान का उद्देश्य है। अस्तु, भगवान् के सच्चिदानन्दघन स्वरूप के चिन्तन से उनके निर्गुण स्वरूप की अवहेलना नहीं होती। प्राकृत जीवों में देह और देहातिरिक्त देही की विद्यमानता होती है। परन्तु सच्चिदानन्दघन, सगुण, साकार स्वरूप मानव-प्राकृत स्वरूप से भिन्न है; वह स्वेच्छया धारण किया हुआ लीलामय विग्रह है।

इस लीलामय विग्रह की लीला का वर्णन भ्रमरगीत का विषय है। **नब्बे रुपये**

अज्ञेय और शेखर : एक जीवनी

●

डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी

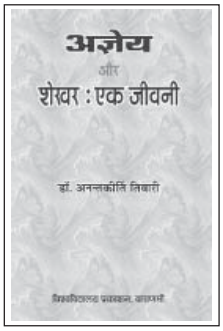

चालीस रुपये

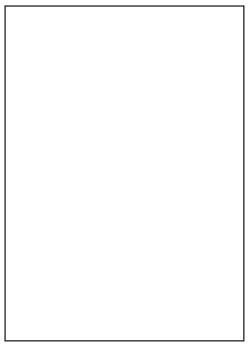

अरुण कुमार शर्मा
की
प्रमुख कृतियाँ

सत्य घटनाओं पर आधारित
योगतांत्रिक कथा प्रसंग
मारणपात्र
दो सौ पचास रुपये

❁

वह रहस्यमय कापालिक मठ
एक सौ अस्सी रुपये

❁

तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी
रोमांचकारी कथा-संग्रह
एक सौ अस्सी रुपये

❁

मृतात्माओं से सम्पर्क
भूत-प्रेत और मृत आत्माओं से
सम्बन्धित सत्य कथा
दो सौ रुपये

❁

तीसरा नेत्र
योगियों से सत्संग और योग-तंत्र
साधना प्रसंग
दो सौ पचास रुपये

❁

परलोक विज्ञान
दो सौ पचास रुपये

❁

कुण्डलिनी शक्ति
दो सौ पचास रुपये

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

पत्रकारिता तथा जनसंचार

इतिहास निर्माता पत्रकार
डॉ० अर्जुन तिवारी 100.00

पत्र, पत्रकार और सरकार
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर (यन्त्रस्थ)

प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* 150.00

मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता
डॉ० कैलाश नारद 60.00

महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *इन्द्रसेन सिंह* 120.00

संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता
डॉ० अशोककुमार शर्मा 300.00

समाचार और संवाददाता
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 80.00

संवाद संकलन विज्ञान
नारायण व्यंकटेश दामले 50.00

स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी
डॉ० अर्जुन तिवारी 120.00

भारत में जनसम्पर्क *डॉ० बलदेवराज गुप्त* (यंत्रस्थ)

हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान
बच्चन सिंह 40.00

आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 80.00

Mass Communication & Development
(*Ed.*) *Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00

Journalism by Old and New Masters
(*Ed.*) *Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00

Modern Journalism & Mass Communication
(*Ed.*) *Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00

इतिहास निर्माता पत्रकार

डॉ० अर्जुन तिवारी

अध्यक्ष
पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

भारतीय पत्रकारिता राष्ट्रीय अस्मिता का ज्वलंत उदाहरण है। इस राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अपने त्याग, तपस्या और साहस से विदेशी सत्ता से संघर्ष के लिए जन-जन में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया, उनमें प्रमुख हैं—

लोकमान्य तिलक, रामानन्द चट्टोपाध्याय, पं० मदनमोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, पं० झाबरमल्ल शर्मा, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी।

इन मनीषी पत्रकारों ने राष्ट्र के इतिहास को दिशा प्रदान करते हुए उसका निर्माण किया।

एक सौ रुपये

भारतीय भाषाओं के प्रमुख उपन्यास

महानायक (मराठी से) *विश्वास पाटील* 150.00

माधव कहीं नहीं हैं (गुजराती से) *हरीन्द्र दवे* 105.00

न जाने कहाँ-कहाँ (बांग्ला से)
आशापूर्णा देवी 85.00

शाहंशाह (मराठी से) *नागनाथ इनामदार* 150.00

मत्स्यगन्धा (असमिया से) *होमेन बरगोहाईं* 45.00

गिरा अनयन नयन बिनु बानी (मराठी से)
बलिवाड कान्ताराव 75.00

मोहदंश (तमिल से) *ति. जानकीरामन* 175.00

उत्तरमार्ग (उड़िया से) द्वि०सं० *प्रतिभा राय* 140.00

पानीपत (मराठी से) तृ०सं० *विश्वास पाटील* 200.00

छावा (मराठी से) *शिवाजी सावन्त* 200.00

निशान्त के सहयात्री (उर्दू से)
क़ुर्रतुलऐन हैदर 95.00

कोरे कागज (पंजाबी से) च०सं० *अमृता प्रीतम* 50.00

स्वामी (मराठी से) च०सं० *रणजीत देसाई* 110.00

सुवर्णलता (बांग्ला से) *आशापूर्णा देवी* 160.00

बकुलकथा (बांग्ला से) *आशापूर्णा देवी* 130.00

माटी मटाल (उड़िया से) *गोपीनाथ महान्ती* 270.00

मृत्युंजय (मराठी से) *शिवाजी सावन्त* 225.00

दायरे आस्थाओं के (कन्नड़ से)
सं०लिं० भैरप्पा 85.00

पूर्णावतार (बांग्ला से) च०सं० *प्रमथनाथ विशी* 45.00

हँसली बाँक की उपकथा (बांग्ला से)
ताराशंकर बन्द्योपाध्याय 85.00

गणदेवता (बांग्ला से) ,, 230.00

शताब्दी पुरुष

राजेन्द्रमोहन भटनागर

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की सैनिक गतिविधियों और जवानों पर केन्द्रित यह नाटक अपने संक्षिप्त रूप में 17 बार मंचित हो चुका है।

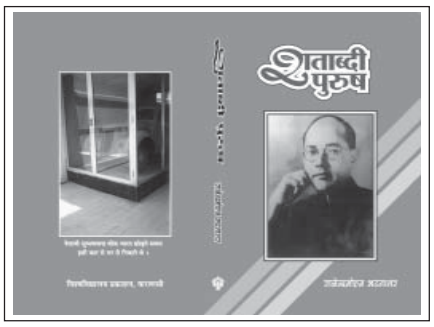

इस नाटक में जवान जीवन की लोमहर्षक गाथा को जीवन्त किया गया है और भारत की आजादी के अविस्मृत चित्र की प्रस्तुति अत्यन्त मार्मिक ढंग से हुई है।

यह नाटक मानवीय मूल्यों, मानवाधिकारों, त्याग-बलिदान और समर्पण भाव को संप्रेषित करने में पूर्णतया सक्षम है।

विश्व में पहली बार स्त्री सैनिकों ने मोर्चा सँभाला और शत्रु पर जय दर्ज करायी। **सौ रुपये**

प्रो० रामजी उपाध्याय के प्रमुख नाटक

सीताभ्युदय

रामायण में गर्भवती सीता के राम द्वारा वन में छोड़े जाने की कलङ्कमयी कवि कल्पना है। सच तो यह है कि वाल्मीकि से ब्रह्मा रामायण लिखवाना चाहते थे। वाल्मीकि को इसके लिए रामचरित का विवरण बताने के लिए प्रत्यक्षदर्शी सीता को उनके आश्रम में रहने की व्यवस्था करनी पड़ी। ब्रह्मा ने सीता के अभुक्त मूल में पुत्र-प्रसव का संयोग बनाया और अपने पुत्र वसिष्ठ से राम को सूचित कराया कि अभुक्त मूल में पुत्र-प्रसव के दुष्प्रभाव से बचने के लिए सीता को वाल्मीकि-आश्रम में रहने की व्यवस्था करें। वाल्मीकि-आश्रम में और उसके बाद पाताल में रहती हुई सीता की स्वर्णिम चारु चरितावली इस नाटक को हिन्दी नाट्य जगत् में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करा चुकी है।

पच्चीस रुपये

अशोक-विजय

अशोक भारत का ही नहीं विश्व का सर्वश्रेष्ठ सम्राट प्रतिष्ठित है। अशोक के विश्वव्यापी अभियान से केवल मनुष्यों का ही नहीं, पशु-पक्षियों का भी स्पृहणीय सुख-सौरभ सम्भव हुआ। विश्व-मानवता के अद्वितीय पुजारी अशोक की नाट्य कथा आधुनिक भारत की ह्रासोन्मुख प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाती हुई विशेष प्रासंगिक है। **पच्चीस रुपये**

कैकेयी-विजय

जनमानस में कैकेयी के प्रति विराग है। फिर भी कैकेयी के महान उत्साह, कर्मण्यता और लोकहित की भावना के संकेत मिलते हैं। प्रायशः रामपरक काव्यों में अर्ध सत्यविद् कवियों और उनके चरितनायकों ने कैकेयी की अकारण निन्दा की है। इसके विपरीत कैकेयी ने कहीं भी किसी की निन्दा नहीं की है। लेखक कैकेयी की इस विशेषता से प्रभावित है। **पच्चीस रुपये**

सुन्दरीनन्द

इस नाटक में महात्मा गौतम बुद्ध के द्वारा अपने भाई और उनकी पत्नी सुन्दरी को राजोचितभोग-विलास के जीवन से विरक्त करने की नाट्य कथा पल्लवित की गई है। **पच्चीस रुपये**

सीतायन

डॉ० मंगलाप्रसाद

सीता-आख्यान को लोक संवेदना रूपी मिट्टी की सुगन्धि से सुवासित करके कवि ने सीता को आदर्श की प्रतिमूर्ति के रूप में न गढ़कर, यथार्थ की भूमिका पर युगधर्म के अनुसार आन्तरिक रूप से संघर्षशील भारतीय नारी के रूप में अंकित किया है।

'सीतायन' सत्यरूपी सीता का सार है। शताब्दी के अन्त की कालजयी कृति है 'सीतायन'। **सौ रुपये**

पुरस्कार-सम्मान

मोदी शिखर सम्मान

प्रसिद्ध कवि **डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन'** को इस वर्ष के दयावती मोदी कवि शिखर सम्मान के लिए चुना गया है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत 2 लाख 51 हजार रुपये नगद, एक स्मृति चिन्ह तथा एक ताम्रपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' को यह पुरस्कार उनकी लम्बी काव्य यात्रा एवं काव्य क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जा रहा है। यह पुरस्कार प्रसिद्ध उद्योगपति डॉ० भूपेन्द्रकुमार मोदी की माता स्व० दयावती मोदी की स्मृति में शुरू किया गया था।

यह पुरस्कार पाने वाले अब तक के कवि हैं— अशोक वाजपेयी, डॉ० सत्यव्रत शास्त्री, डॉ० केदारनाथ सिंह, विनोदकुमार शुक्ल तथा डॉ० रामदरश मिश्र। पुरस्कार चयन समिति के अध्यक्ष डॉ० विद्यानिवास मिश्र हैं तथा अन्य सदस्यों में डॉ० वेदप्रताप वैदिक, प्रसिद्ध लेखक भोलाभाई पटेल तथा सुप्रसिद्ध विचारक डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय हैं।

ज्ञान भारती पुरस्कार

दैनिक जागरण के संपादक एवं राज्यसभा सदस्य **श्री नरेंद्र मोहन** को इस वर्ष का ज्ञान भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह घोषणा जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर अनंत श्री विभूषित स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज ने की है।

श्री नरेन्द्र मोहन को समाज और राष्ट्र के प्रति की गई सेवा को ध्यान में रखकर ज्ञान भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रभु प्रेम संघ प्रन्यासी मंडल द्वारा देश की एक महान विभूति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

साहित्य महोपाध्याय उपाधि

प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार **डॉ० श्री प्रसाद** को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर साहित्य महोपाध्याय मानद उपाधि से सम्मानित किया है। यह उपाधि उन्हें बाल साहित्य में विशिष्ट लेखन के लिए प्रदान की गई है।

प्रथम कथा चूड़ामणि सम्मान

हिन्दी की प्रख्यात लेखिका **कृष्णा सोबती** को प्रथम कथा चूड़ामणि सम्मान दिये जाने की घोषणा की गयी है।

कथा संस्था ने अपनी दसवीं वर्षगाँठ के मौके पर आज इस पुरस्कार की घोषणा की। सम्मान में 51 हजार रुपये तथा प्रशस्ति पत्र शामिल है।

सम्मान के अन्तर्गत पुरस्कृत लेखिका की महत्त्वपूर्ण कृति का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया जायेगा और उन्हें जयपुर, बंगलोर, मुंबई, शिलांग तथा अमृतसर की यात्रा करने की सुविधा दी जायेगी ताकि वह वहाँ के क्षेत्रों तथा शिक्षकों से संवाद कायम कर सकें।

सुलभ साहित्य पुरस्कार

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं मूर्धन्य कवि **त्रिलोचन शास्त्री** को दो लाख रुपये के सुलभ साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री शास्त्री को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में वर्ष 1999 का यह पुरस्कार केन्द्रीय उपभोक्ता मामले एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री शांताकुमार ने प्रदान किया।

व्यास सम्मान

वर्ष 1999 का प्रतिष्ठित व्यास सम्मान प्रख्यात उपन्यासकार **श्रीलाल शुक्ल** को उनके नवीनतम उपन्यास 'बिश्रामपुर का संत' के लिये दिया जायेगा।

के०के० बिड़ला फाउंडेशन की विज्ञप्ति के अनुसार यह निर्णय विख्यात हिन्दी व गुजराती साहित्यकार प्रो० भोलाभाई पटेल की अध्यक्षता वाली सात सदस्यीय चयन समिति ने किया है। पुरस्कार की सम्मान राशि ढाई लाख रुपये है। चयन समिति ने अपने वक्तव्य में कहा है कि श्रीलाल शुक्ल का प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' नैतिक मूल्यों के ठहराव का उपन्यास है जिसका विस्तार 30 वर्ष बाद प्रकाशित 'बिश्रामपुर का संत' में अभिव्यंजित हुआ है।

अणुव्रत पुरस्कार

हिन्दी के विख्यात लेखक, गाँधीवादी चिंतक और अणुव्रत के प्रबल पोषक **यशपाल जैन** को शान्ति तथा अहिंसा के क्रियान्वयन के लिए वर्ष 1998 का अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के तौर पर एक लाख रुपये की धनराशि और प्रशस्ति-पत्र दिए जाने का प्रावधान है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिन्दी के जाने-माने उपन्यासकार **विनोदकुमार शुक्ल** को उनके उपन्यास **'दीवार में एक खिड़की रहती थी'** के लिए इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार हेतु चुना गया है। इक्कीस भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार की घोषणा की गयी।

साहित्य अकादमी की जारी विज्ञप्ति के अनुसार साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुने गये लोगों में *उर्दू* के मशहूर शायर **बशीर बद्र** 'आस' कविता संग्रह, *बांग्ला* लेखिका **नवनीता देवसेन** 'नवीनता' कविता एवं कहानी संग्रह, *असमिया* उपन्यासकार **मेदिनी चौधरी** 'विपन्न समय' उपन्यास और *संस्कृत* कवि **श्रीनिवास रथ** 'तथैव गगनम शैव धारा' कविता शामिल हैं।

राजस्थानी भाषा के लिए **वाशु आचार्य** 'सीरन रो घर' कविता संग्रह, *मैथिली* के लिए **साकेतानंद** 'गणनायक' लघु कथा; *पंजाबी* के लिए **निरंजन तसनीम** 'गावाचे अर्थ' उपन्यास और *सिन्धी* के लिए **वासदेव मोही** 'बर्फ जो घायल' कविता चुने गये हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुने जाने वालों में *डोगरी* के दिवंगत कवि **कुलदीप सिंह जिन्दडियां** 'मांगवी पशाक्री' कविता; *गुजराती* आलोचक **निरंजन भगत** 'गुजराती साहित्य' पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध, आलोचना; *कन्नड़* निबन्धकार दिवंगत **डी०आर० नागराज** 'साहित्य कथन' निबन्ध; *कोंकणी* कवि **शरतचंद्र शिनाय** 'अंतरनाद' कविता और *मलयाली* कहानी स्वर **सी०वी० श्री रमण** 'श्रीरमणते कथाकाल' लघु कहानियाँ शामिल हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुने जाने वालों में *मणिपुरी* कवि **लानचेनबा मीनई** 'ही मांगबू होंदेदा' कविता संग्रह, *मराठी* उपन्यासकार **रंगनाथ पठारे** 'ताम्रपट' उपन्यास, *नेपाली* कहानीकार **विक्रमवीर थापा** 'बीशोन शताब्दि की मोनालिसा' लघुकथा संग्रह, *उड़िया* कवि **हरप्रसाद दास** 'गर्भगृह' कविता संग्रह, *तमिल* कवि **अब्दुल रहमान** 'आलापनाइ' कविता संग्रह, *तेलुगू* निबन्धकार **वल्लमपती वेंकटसुबैया** 'कथा शिल्पम' निबंध संग्रह और *अंग्रेजी* कवि दिवंगत **ए०के० रामानुजन** 'द क्लेक्टेड पोएम्स ऑफ ए०के० रामानुजन' कविता संग्रह शामिल हैं।

भारत-भारती समेत सभी पुरस्कारों की घोषणा खटाई में

अपनी तंगहाली और बदहाली के चलते हिन्दी संस्थान इस सदी के अन्तिम वर्ष के भारत-भारती सहित अपने अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों और सम्मानों की घोषणा अब शायद अगली सदी में ही कर सके। इन पुरस्कारों में कल्याण सिंह सरकार द्वारा नये शुरू किए चार पुरस्कार भी शामिल हैं जिनकी पहली बार घोषणा की जानी है। पर हिन्दी संस्थान की माली हालत इतनी खराब है कि वह कार्यकारिणी के सदस्यों को यात्रा भत्ता देने की भी स्थिति में नहीं है। तेइस साल बाद ऐसा मौका आया है जब यहाँ वेतन बकाया हो गया है।

ज्ञातव्य है कि हिन्दी संस्थान हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर अपने प्रतिष्ठित पुरस्कारों की घोषणा करता है।

इन पुरस्कारों में ढाई लाख के भारत-भारती और दो लाख के लोहिया साहित्य सम्मान के अलावा अन्य कई पुरस्कार पहले से ही शामिल थे और कल्याण सिंह ने दो-दो लाख के चार नये पुरस्कार घोषित करके पुरस्कारों के इस सिलसिले को और बढ़ा दिया। कल्याण सिंह ने नये पुरस्कार घोषित तो कर दिए लेकिन अब इनके लिए धन नहीं है और ये अपने शुभारम्भ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रतीक्षा की इस कड़ी में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के पिता के नाम पर दिया जाने वाला पुरस्कार भी शामिल है। विदित है कि हिन्दी संस्थान द्वारा हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट में हिन्दी विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी पुरस्कार दिया जाता है। कल्याण सिंह ने प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की मौजूदगी में दो-दो लाख के दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान, अवन्तीबाई लोधी साहित्य सम्मान, महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान और हिन्दी गौरव सम्मान पुरस्कारों की घोषणा की थी।

कुल मिलाकर हिन्दी संस्थान को लगभग 31 लाख के पुरस्कार देने हैं लेकिन फिलहाल इसको देना तो दूर इसकी घोषणा भी अभी दूर-दूर तक होती नहीं दिखायी पड़ती। इसी प्रकार वर्ष 97 में प्रकाशित पुस्तकों पर पुरस्कार की घोषणा भी अपने पूरी होने की प्रतीक्षा में है।

कथा शताब्दी समारोह, कलकत्ता

कम्प्यूटर, टी०वी० की चकाचौंध मात्र थोड़े दिन के लिए ही है, जबकि किताबें हमेशा रहेंगी। किताबों में लिखा हुआ जहाँ हर वक्त सुलभ होता है और सोच का मूल होता है, वहीं पर कम्प्यूटर, टी०वी० या अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों पर जो कुछ आ रहा होता है, उसका आधार मूलत: किताबें ही होती हैं। यह दुर्भाग्य ही है कि उपन्यास साहित्य जैसी किताबें आज बाजारू माल की तरह बेची जा रही हैं। इस विषम स्थिति में साहित्यकार, मीडिया के लोग या और भी जो बौद्धिक वर्ग के लोग हैं, वे साहित्य की विशिष्टता को बचाये रखने में एक-दूसरे का सहयोग करें।

— कथाकार गोविन्द मिश्र

भारतीय वाङ्मय विविध भाषाओं में रचा गया है। विश्व में इसकी अपनी तरह की प्रतिष्ठा है।

— बलशौरि रेड्डी

आज का लेखक परिस्थिति के चलते कुंठित होता जा रहा है, अच्छी पत्र-पत्रिकाएँ बन्द होती जा रही हैं, जबकि पठन-पाठन से जुड़े पाठक की तृप्ति नहीं हो पा रही है, जरूरत है कथाकारों को सब्र रखने और लेखन में प्रौढ़ता लाने की और यह सोचने की, कि लिखना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना कि लिखे हुए को जन-जन तक पहुँचाना महत्त्वपूर्ण है।

— कथाकार सूर्यबाला

पुस्तक

लेखन-प्रकाशन, वितरण

पुस्तकों के लेखन, प्रकाशन, वितरण एवं पठन का काम भी राष्ट्र को आगे ले जाने के उद्देश्य से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अभी तक अधिकांश लोग जो इसमें लगे हैं वे इसे आजीविका का साधन ही समझते रहे हैं। कुछ लोगों में आदर्शवाद रहा है जो इसे श्रेष्ठतर ढंग से करते हैं। इसमें लेखक, प्रकाशक व अन्य सभी शामिल हैं। परन्तु यह इतना बड़ा काम है जिसके लिए राष्ट्रव्यापी भागीरथ प्रयत्न होना चाहिए और इसमें पुस्तकोत्पादन में लगे हुए लोगों से भी अधिक सरकार का अग्रसर होना आवश्यक है। वे इस बात को समझें कि पुस्तकों के द्वारा ही राष्ट्रोन्नति होगी। पुस्तकों के द्वारा ही इस देश के व्यक्ति अधिक समझदार, श्रेष्ठ व देश को आगे ले जाने वाले बन पायेंगे। इस काम के लिए उन्हें बहुत महत्त्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए। अभी तक मानव संसाधन मंत्रालय की एक छोटी-सी शाखा ही इस काम को देखती है और उनको जितना धन मिलता है वह यथोचित राशि का एक प्रतिशत भी नहीं। कारण यह है कि इसमें किसी को रुचि नहीं है।

बड़े-बड़े नेता भी यदि उन्हें किसी पुस्तक लोकार्पण समारोह में बुलाया जाए अथवा पुस्तक प्रदर्शनी के उद्घाटन के लिए आमंत्रित करें तो इसी में अपने आपको धन्य समझते हैं व अपनी साहित्य के प्रति निष्ठा का प्रदर्शन करके प्रसन्न होते हैं। पुस्तकें राष्ट्रोन्नति के लिए कितनी आवश्यक हैं, इसके लिए क्या यत्न करना चाहिए, इससे उन्हें कुछ लेना-देना नहीं। प्राय: वे वहाँ जो भाषण देते हैं वह भी उनके सचिवों के द्वारा लिखे होते हैं। कई बार तो पढ़ते-पढ़ते बीच में अटक भी जाते हैं।

दीनानाथ मल्होत्रा

पीयूष-दंश

(काव्य संग्रह)

●

मिलाप दूगड़

पीयूष-दंश की कविताओं के अन्तराल में रागात्मक भाव बोध की संवेदनशीलता है। इन कविताओं में सौन्दर्य के साथ शिव का सामञ्जस्य है। प्रकृति इस सौन्दर्य का आधेय है।

नील पटल से श्यामल घट की
आहट पाई आज।
भूतल की पायल में नूतन
रुनझुन छाई आज।

काव्य और संगीत का यह मणिकांचन संयोग है।

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

पचास रुपये

भारतीय वाङ्मय

त्रैमासिक

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 20.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

के लिए

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001

(उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001

(U.P.) (INDIA)

● Phone : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com